Fortnightly per copy Rs. 4/- only

ओ३म्

18th June 2020

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month

उपदेश करने का अधिकारी

यश्चिकेत स सुक्रतुर्देवत्रा स ब्रवीतु नः ।
वरुणो यस्य दर्शतो मित्रो वा वनते गिरः ।। -ऋ. ५।६५।१

शब्दार्थ-य :- जो **चिकेत**-जाने, ज्ञानी होवे, **वरुणः** -सबसे श्रेष्ठ भगवान् जिसकी **गिरः** -वाणियों का **वनते**-सत्कार करता है, **सः** -वही **सुक्रतुः** -उत्तमकर्मा हो सकता है, **सः** -वही उत्तम ज्ञानी श्रेष्ठकर्मा **देवत्रा**-देवों के सम्बन्ध में **नः** -हमें **ब्रवीतु**-बोले, उपदेश करे ।

व्याख्या-वेद आचार पर बड़ा बल देता है । संसार के सभी मत-पन्थ और सम्प्रदायों के ग्रन्थ विश्वास-ईमान को प्रथम स्थान देते हैं । वेद ही ऐसा धर्मग्रन्थ है, जिसमें ईमान का स्थान तो है, किन्तु प्रधान नहीं । प्रधान स्थान आचार का है । वेद की इस भावना की झलक पौराणिक साहित्य में भी लि जाती है । एक पुराण में लिखा है-

आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः

(१ महाभारत वन. ३१३।११७)-आचारहीन को वेद भी पवित्र नहीं कर सकते । वेद को तो 'पावमानीः' -पवित्र करनेवाला कहा गया है और यह पुराणवाक्य वेद की इस मनुष्य मिलते हैं, जिन्होंने चारों वेद कण्ठ कर लिये हैं और जो एक-एक मन्त्र का विस्तार से भाव समझा सकते हैं, किन्तु उनका आचार उनके विपरीत है । तब वेद क्या करेगा ? वेद का काम प्रेरणा करना है । मानना न मानना मनुष्य का काम है । इस आशय को समझकर ऋषियों ने कहा- **'आचारः परमो धर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त्त एव व ।'** -(मनु. १।१०८) श्रति-स्मृति में निर्दिष्ट आचार ही मुख्य धर्म है । वेद में आचार को यज्ञ कहा जाता है । वहाँ यज्ञ को मुख्यधर्म बतलाया गया है ।

इस मन्त्र में उपदेश देने के अधिकारी का वर्णन है-उपदेशक में निम्न लिखित गुण होने चाहिएँ-

१) **'यश्चिकेत'**-जो जानता हो । जिस पदार्थ का उपदेश करना है, उसका उसे ज्ञान हो । अज्ञानी उपदेशक तो भ्रम में डाल देगा । जो जिसे जानता नहीं वह उसका उपदेश क्या करेगा ? किन्तु आज अनेक उपदेशक ऐसे हैं, जिन्हें अपने उपदेश्य विषय का ज्ञान नहीं है ।

२) **'सः सुक्रतुः'**-वह सुकर्मा हो । उपदेशक के कर्म श्रेष्ठ होने चाहिएँ । ज्ञान के अनुसार उसका आचार-व्यवहार हो । उसके विचारों और आचारों में समता हो, न कि विषमता । वह अपने विचार के अनुसार कह और कर सकता हो ।

३) **'वरुणो यस्य दर्शतः'**-वरुण जिसका दर्शनीय-आदर्श हो । जो अपने प्रत्येक कर्म और विचार में भगवान् को अपना आदर्श समझता हो । भगवान् को आदर्श मानकर चलनेवाला मनुष्य अपने उपदेश में भ्रम या ठगी की कोई बात नहीं कह सकता, क्योंकि भगवान् सदा भ्रमरहित एवं ठगीशून्य है, वह प्राणियों के कल्याण के लिए ही उपदेश करता है ।

४) **'मित्रो वा वनते गिरः'** -स्नेहवान् भगवान् जिसकी बात का समादर करता हो । वेद में प्रार्थना है-

सखेव सख्ये गातुवित्तमो भव । -ऋ ९।१०४।५

हे प्रभो ! तू मित्र है, अपने मित्र के लिए सबसे अधिक ज्ञानी है, अर्थात् तू मित्र की आवश्यकताओं को जानता है । तू उसकी बातें सुनता है और पूरी करता है । संक्षेप में, उपदेशक में उपदेश्य विषय का ज्ञान, सदाचार, ईश्वर निष्ठा, प्रभु की भक्ति-न्यून-से-न्यून इतने गुण अवश्य होने चाहिएँ । इन गुणों से हीन उपदेशक वाह-वाह भले ही प्राप्त कर ले, किन्तु जनकल्याण नहीं कर सकता ।

-स्वामी वेदानन्दजी तीर्थ

नब्ज पर हाथ

-अजित द्विवेदी

इन दिनों देश में कोरोना वायरस चिंता के साथ साथ शराब का विर्मर्श चल रहा है । आम तौर पर इसका विमर्श बहुत हल्का फुल्का होता है । पर इस बाद इसके कई पहन् जादिर हो रहे है । और कुछ चहक् तो बेंहद गंभी रहै । उन दिनो पुरें देश में चल रहे विमर्श के मुख्य रूपए तीन हिस्से दे । सामाजिक आर्थिक और संस्कृतिक साहितीक । हर पहलू से श्स विमर्श को आगे बढाया जा रहा है । करोना संकट के समय घर में बैठे लोगों की रचनात्मकता अलग अपने चरम पर है और शराब को लेकर जैसा सृजनात्मक कार्य हो रहा है वह साहित्य संस्कृति की स्वर्णिम दिनों की याद दिलाने वाला है । इस विमर्श से देश की प्राथमिकता भी जाहीर हुई है । पुरे देश में कही भी स्कूल कॉलेज खोलने की भी मांग नही उठी । और नही किसी ने यह कहा कि मंदिर मस्जिद गुरुद्वारे गिरीजाघर नही खुले तो गज़ब हो जाएगा । लेकिन शराब की दुकान खुलवाने के लिये ऑनलाइन भी मुहिम छीडी थी । और सरकार ने जैसे इसके लिये तैयार खडि थी ।

बहरहाल सबसे पहले शराब के आर्थिक विमर्श पर नजर डालते है । इसी जगह व्यास जी ने अपने कॉलम में अपन तो कहेंगे में पांच मई को लिखा था आपको पता है शराब से सरकार को कितनी कमाई होती है 15 से 30% के बीच । जैसे दिल्ली सरकार को पिछले साल शराब से 14 प्रतिशत रेवेन्यू यानी साढे पांच हजार करोड मिले थे म.प्र. सरकार को 9-10 करोड यू.पी. को 26 हजार करोड रू. महाराष्ट्र को 24 हजार करोड और राजस्थान और अन्य राज्यो की कुल 2.48 लाख करोड रूपये याने की 15 से 11

प्रतिशत की ब्रिकी पर टॉक्स से कमाई होती है । यह कह सकते है 40 दिन की तालाबंदि ने शराबीयों को तडपाया तो राज्य सरकारों को भी भूखा प्यासा बनाया तभी केरल से पंजाब पं. बंगाल से राजस्थान तक सभी तरफ से तो कम से कम शराब की ठेके की हमारी कमाई की नलके तो खोलें पैसा नहीं होगा तो वायरस से कैसे लडेंगे ।?

लोगों ने इस विमर्श को आगे बढाने में अपनी अपनी तरह से भूमिका निभाई है । जो लोग शराब कि दुकानो के आगे लाईन में खडे है उनकी अपनी भूमिका है । लाईन में खडे अपनी भूमिका है और जो लोग शराबीयों पर फूल बरसा रहे है उनकी अपनी अलग भूमिका है और जो लोग घर मे भैठे रचनात्मकता दिखा रहे है । उनकी अलग भूमिका है सो जो बात व्यास जी ने आकडों के सहारे कही वही बात सोशल मिडीया में व्यँग के तौर पर अलग-अलग तरह से कि जा रही है । जैसे किसी ने लिखा कोई भी सरकार के भरोसे न रहे सरकार खुद शराबीयों के भरोसे है । जरा सोचो लोगों का हौसला बढाने वाली यह कितनी बडी बात है और सरकार से उम्मीद लगाए बैठे लोगों का इससे कैसे मोह भंग होगा । इसी तरह किसी इसरे ने बिखा लोगों ने ता 40 दिन बरदाश्त कर लिया पर सरकारों से बरदाश्त नही हो सका । ऐसे ही कोई शराबीयों को कोरोना का वारियर्स घोषित करने की मांग कर रहा है । तो कोई यह बता रहा है कि शराबी के पैर इसलिए लडखडाते है क्योंकि उसके कंधो पर देश की अर्थ व्यवस्था का भार होता है ।

सचमुच अगर शराब पेट्रोल और डिजल न हो या दूसरी गैर जरूरी चिजो की खरिदी नहीं तो देश की अर्थ व्यवस्था का क्या हाल होगा ? यह गंभीर आर्थिक विमर्श का विषय है । देश और दुनिया की अर्थ व्यवस्था की हालत आज इतनी खराब इसलिए है क्यों कि शराब, पेट्रोल, डिजल या अन्य गैर जरूरी चिजें नही खरीद रहे है । यह हकिकत है कि दुनिया भर के लोग जरूरत के चिजे और दवा तो खरीद रहे है इसके बावजुद अगर अर्थ व्यवस्था का भट्टा बैठा हुआ है तो इसका मतलब है कि देश और दुनिया की आर्थिकी गैर जरूरी चिजों की खरीद विक्री से चलती है ।

शराब का सामाजिक-पारिवारिक विमर्श इससे ज्यादा गंभीर है । जब देश में लॉकडाऊन लागू हुआ है तब से घरेलू हिंसा और बच्चों पर अत्याचार की घटनाओं में बढोत्तरी हुई है । यह तब हुआ जब शराब पूरी तरह से बंद थी और दवा रूप में भी लोगों को उपलब्ध नहीं थी । शराब खोरी के बाद तो इस किस्म की हिंसा में निश्चित रूप से बढोत्तरी होगी । इस से एक बड़े तबके में घरों में बंद महिलाओं बच्चों का जीवन दुभर बनेगा । एक दूसरा खतरा भी है संयुक्त राष्ट्र संघ का आकलन है कि लॉकडाऊन के अवधी में 70 लाख अनचाहे गर्भ की संभावना भी है । शराब खोरी के बाद इसमें और भी बढोत्तरी होगी क्यों कि शराब अंततः इन्सान को उच्छश्रृंखल बनाती है और अच्छे भूरे का भेद तक खत्म कर देती है इससे सोशल डिस्टेसिंग के नियमों का पालन कमज़ोर होगा और समाज परिवार के अन्य नियमों के भी धज्जिया उडेंगी समाज में हर किस्म के अपराध भी बढ़ेंगे ।

साहित्य और संस्कृति में तो पहिले से ही शराब, अहम भूमिका रही है । ज्ञात है कि इतिहास के सब से महान कवियों में से एक असुदुल्लाखाँ गालिब का एक किस्सा है । उनको मुगल दरबार से वज़िफा मिलता था, वज़िफा का पैसा मिलते ही वे मेरठ जाते थे और सेना की कॉंटिन से महीने भर की शराब खरीद कर लाते थे । किसी ने पूछा कि मिर्जा आप ऐसा क्यों करते है तो गालिब का जवाब था- अल्लाह ने रोटी देने का वादा किया शराब का नही

-शेष पृ.७ पर

धर्म क्या है ?

-स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती

सूर्य उदय हुआ है वा नहीं, यह बात कह कर बतानी नहीं पड़ती । प्रकाश और गर्मी स्वयं इस बात का परिचय देते है कि सूर्योदय हो गया । इसी प्रकार यदि कोई मनुष्य धर्मात्मा हो तो उसका परिचय यह कर नहीं दिया जा सकता कि वह मनुष्य धर्मात्मा है, क्योंकि उसने सौ बार नाम का जाप किया है, हजार बार गायत्री जपी है, एवं वह नित्य धर्म-पुस्तक का पाठ करता है । कोई मनुष्य सचमुच धर्मात्मा है या नहीं, इसका पता इस बात से लगता है कि उसके चारों ओर रहने वालों पर उसके व्यवहार से कोई सुखदायक प्रभाव पड़ता है या नहीं । अपने चारों ओर की अवस्थाओं में परिवर्तन धर्मात्मारूपी सूर्य की धूप है । बस, यदि हम यह जानना चाहें कि हम धर्मात्मा हैं या नहीं, तो इसे हम अपने जाप और पूजा पाठ से नहीं नाप सकते । इसे हम अपने चारों ओर होने वाले सुखदायक परिवर्तन से जान सकते हैं । लैम्प में प्रकाश है वा नहीं, इसे हम इस बात से नहीं नाप सकते कि उसमें पूरा तेल भरा है वा नहीं । लैम्प के प्रकाश का माप केवल इस बात से हो सकता है कि उसके चारों ओर का अन्धकार दूर हुआ है या नहीं । सूर्य बिना तेल-बत्ती के प्रकाश मान है । एवं, बुझा हुआ दीपक तेल-बत्ती के होते हुए भी प्रकाशहीन है । इसी प्रकार कई मनुष्य पूजा-पाठ के बिना भी धर्मात्मा हैं, वे सूर्यवत् हैं और कई मनुष्य पूजा-पाठ करते रहने पर भी धर्महीन हैं । वे पाखण्डी हैं । परंतु साधारण मनुष्यों में लैम्प के समान प्रकाश उत्पन्न करने के लिए पूजा-पाठ रूपी तेल-बत्ती की आवश्यकता रहती है । जो मनुष्य साधारण होते हुए भी पूजा पाठ से तथा सत्संग से हीन हैं उनका दिया भी बुझा रहता है । यह बात दूसरी है कि उनके दिए बुझने का कारण पाखण्ड का भूआं नहीं, अभिमान की आँधी है । दिया धूएं से बुझे चाहे आंधी से-इससे उसके प्रकाशहीन होने मे कुछ अन्तर नहीं आता । जिस मुहल्ले में तुम रहते हो यदि उसकी नालियां दुर्गन्ध-युक्त हैं और चारों ओर कीचड़ सड़ रहा है, मच्छरों की बस्तियाँ बस रही हैं, लोग मैले-कुचैले अनपढ़, रोगों के मारे और निर्धनता के सताये है, और तुम इन अवस्थाओं में परिवर्तन करने के लिए कुछ नहीं कर रहे हो तो मत समझो तुम धर्मात्मा हो । चाहे तुम कितनी लम्बी समाधि भी लगाते हो, कितना भजन-कीर्तन करते हो, कितने घण्टे-घड़ियाल बजाते हो, और कितनी भी सामग्री फूंक देते हो, तो भी धर्मात्मा नहीं हो । यदि तुम्हारे मन्दिर की आरती ने, तुम्हारी लम्बी सन्ध्याओं ने और तुम्हारी पाँच नमाजों ने तुम्हारी आँखों को गरीबों का दुःख देखने के लिए, तुम्हारे कानों को उनकी दर्द-भरी आहें सुनने के लिए और तुम्हारे हाथों को उनके कष्ट-निवारण के लिए विवश नहीं किया, तो तुम आँखे रखते भी अन्धे हो, कान रखते भी बहरे हो, हाथ रखते भी लूले हो । संसार में आज तक जितने भी महात्मा धर्म का प्रचार करने पाए, वह इस ही समवेदना की भावना का प्रकाश तुम्हारे दिए-बत्ती में जलाने आये थे । पादरी लोग जब कहते हैं कि मसीहा ने अन्धों को आंखें दीं, बहरों को कान दिये, लूले-लंगड़ों को हाथ-पैर दिये, तो वह उस महात्मा के कारनामों को ठीक रूप में पेश नहीं करते । संसार के सभी महात्माओं ने अन्धों को आँखें दी, बहरों को कान दिये, लूले लंगड़ों को हाथ-पैर दिये । पर इस अभागे संसार ने काम, क्रोध, मोह, लोभ, आलस्य, प्रमाद आदि के घोर विष से अपने-आपको अन्धा, बहरा, लूला, लंगड़ा बना डाला ।

कायाकल्प अद्वितीय पुस्तक के प्रणेता, थैले में चारों वेद की संहिताएं लिए वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था के लिये जीवन के हर सांस की आहूति देने वाले पंडित बुद्धदेव विद्यालंकार अपनी पूर्ण तरुणाई में

-चित्र : नरेन्द्र जी (हैदराबाद) के सौजन्यस से

जिस समय महात्मा पुरुषों की प्रेरणा से जागृत हुई समवेदना की भावना हमें अपने चारों ओर फैली हुई बिगड़ी अवस्था का परिवर्तन करके, इस धरती को साफ-सुथरी और आनन्द भरी बनाने के लिए कटिबद्ध करती है, उस समय हमारी खोई हुई आँखें वापिस मिल जाती हैं, हमारे बहरे कान सुनने लगते हैं, और हमारे कटे हुए हाथ-पैर फिर हरे हो जाते हैं । बस, जहाँ यह अपने चारों ओर की अवस्था को सुखमय दशा में परिवर्तन करने की प्रबल भावना जीती है, वहीं धर्म है । यही धर्म का स्वरूप है ।

धरती की वर्तमान अवस्था

यह धरती एक-छोटा सा ब्रह्माण्ड है । अर्थात् परब्रह्म की शक्ति के गर्भ से निकले हुए अनेक अंडों में से एक चोटा-सा अण्डा है । इसका व्यास ८ हजार मील लम्बा और परिधि २५ हजार मील है । इस पर इस समय की मनुष्य-गणना के अनुसार लगभग ३ अरब (जिस समय पुस्तक लिखी गयी थी विश्व की जनसंख्या २ अरब से अधिक थी ।) से अधिक मनुष्य बसते है । यदि ये सब मनुष्य एक भाषा बोलें, एक मर्यादा में चलें, और इस धरती माता को अपनी माता समझें, समस्त मानव-समाज की सेवा को, अथवा प्राणिमात्र की सेवा को परमात्मा की आराधना का सबसे बड़ा साधन समझें, तो इस धरती पर एक अवर्णनीय सुख का साम्राज्य हो जाये । परन्तु क्या इस समय धरती की जैसी अवस्था होनी चाहिए वैसी है ? क्या मानव जाति की एक मर्यादा है ? क्या सम्पूर्ण मानव राष्ट्र को भूमिमाता से प्रेम है ? क्या विश्व की एक भाषा है ? इस

-शेष पृ.७ पर

विचार स्वातन्त्र्य पर आघात सहन नहीं होगा

पंचम आर्य महासम्मेलन, दिल्ली (२०–२२ फरवरी १९४४) के अवसर पर

डॉ० श्यामाप्रसाद मुखर्जी का ऐतिहासिक अध्यक्षीय भाषण

दिल्ली में हुए पंचम अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन के अध्यक्ष सर्वसम्मति से डॉ० श्यामाप्रसाद मुखर्जी चुने गए थें जब सिन्ध की मुस्लिम लीगी सरकार ने ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' के चौदहवें समुल्लास (जिसमें मुस्लिम मजहब की तर्कसंगत आलोचना है) पर प्रतिबन्ध लगाया तो हैदराबाद के सत्याग्रह से लौटकर थकान भी न उतार पाये कि आर्यजन फिर फुरहरी ले उठें हैदराबाद सत्याग्रह से पूर्व जिस प्रकार शोलापुर में श्री एम० एस० अणे की अध्यक्षता में एक अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन कर हैदराबाद की ओर प्रयाण का शंख फूंका गया था, ठीक उसी प्रकार का अवसर दोबारा आया, जब सिन्ध की ओर प्रयाण करना था और किसी भारतीय संस्कृति के उपासक का अध्यक्ष पद से आशीर्वाद लेकर कूच का नगाड़ा बजाना थां डॉ० मुखर्जी की अध्यक्षता से महासम्मेलन का वातावरण जहां एक ओर गम्भीर बना हुआ था, वहीं उनसे उत्प्रेरित आर्यों का जोश धधकता हुआ अंगार प्रतीत हो रहा थां श्री मुखर्जी का अध्यक्षीय भाषण न केवल आर्यसमाज की, अपितु हिन्दूसमाज एवं भारतीयता के अभिमानियों की अनुपम निधि हैं उन्होंने हिन्दुओं के प्रत्येक वर्ग को संगठित होकर जहां भारत की पुनीत संस्कृति और उसके 'सत्यार्थप्रकाश' जैसे अमर ग्रन्थों की रक्षा के लिए आह्वान किया, वहां सिर पर होकर उतरने का दुस्साहस करनेवाले मुस्लिमों को चेतावनी देते हुए कहा– ''अब वह समय भी आ गया है जब उस अँगरेजी सत्ता को भी उखाड़ कर फेंका जायेगा जो इनकी पीठ पर बोल रही हैं'' श्री मुखर्जी का वह ऐतिहासिक भाषण ज्यों–का–त्यों नीचे दिया जा रहा हैं –आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र}

आप लोगों ने मुझे अखिल भारतवर्षीय आर्य सम्मेलन के पांचवें अधिवेशन का सभापति निर्वाचित करके जो सम्मान दिया है, उसे मैं हृदय से अनुभव करता हूं आपका सम्मेलन, कार्यक्रम तथा कार्यों पर विचार करने के लिए नियमित रूप से होनेवाली सभाओं की भांति प्रतिवर्ष नहीं होता, प्रत्युत विशेष परिस्थितियों का सामना करने के लिए तथा भारतवर्ष के हित और विशेषरूप से हिन्दू जाति के अधिकारों से सम्बन्ध रखनेवाले महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के विषय में आर्यजनों का मत निर्धारण करने के लिए जगत् के आर्यमात्र की 'प्रतिनिधि सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा' द्वारा आमन्त्रित किया जाता हैं यह अधिवेशन विशेष महत्त्व रखता है, क्योंकि यह हमारे देश के जीवन की बहुत ही पेचीदा घड़ी में हो रहा हैं एक ओर विनाशकारी युद्ध मानवी सभ्यता की जड़ों को खोखला कर रहा है, और दूसरी ओर भारतवर्ष की आन्तरिक दशा को ऐसी अर्थव्यवस्था में डाल दिया गया है कि देश के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक अधिकार खतरे में पड़ गये हैं

आज मुझे आर्य समाज द्वारा राष्ट्र की जागृति के लिए किये गए महान कार्यों के प्रति श्रद्धांजलि समर्पित करने का जो अवसर मिला है, उसका मैं स्वागत करता हूं हमारी प्यारी मातृभूमि के घटनापूर्ण इतिहास में भारतीय संस्कृति और सभ्यता पर बारम्बार आक्रमण होते रहे हैं कई सदियों से हम राजनीतिक दृष्टिकोण से पराधीन हैं तो भी समय–समय पर देश में ऐसे महात्मा, ऋषि और आचार्य जन्म लेते रहे हैं जो अपने विचारों और कार्यों के प्रभाव से जाति को गिरावट से बचाते और उसके मन में नये जीवन और ओज का संचार करते रहे हैं हमारी जाति के अनेक श्रेष्ठ पुरुष जन्म लेते रहे हैं, जो विचार और कार्य की दृष्टि से वीर कहलाने के अधिकारी थें हिन्दू, बौद्ध और जैन राजा संरक्षक और धर्मगुरु, महान सिद्ध और भक्त, ईश्वरभक्ति के मद में मस्त सन्त और भक्त, ऐसे उद्भट विद्वान् आचार्य जिन्होंने अपने बुद्धिबल से धर्म राज्य की स्थापना का प्रयत्न किया, ऐसे सन्त, साधु और वैरागी जिन्होंने मुसलमानों द्वारा भारत की विजय के पश्चात् उत्पन्न होकर मुसलमान सूफियों और फकीरों का स्वागत किया और जिन्होंने भारतीय सभ्यता की जबर्दस्त भावना के अनुरूप त्याग, सेवा और भक्ति का सन्देश भारत को सुनायां ऐसे सब महापुरुष समय–समय पर आकर जाति को नाश से बचाते और जीवन का मार्ग दिखाते रहे हैं

भारतीय जागृति का नया युग

पूर्व और पश्चिम के सम्पर्क ने भारतीय जागृति का एक नया युग पैदा कर दियां उन्नीसवीं सदी ने देश को कई ऐसे महान नेता दिये जिन्होंने अपने विचारों की शक्ति से देशवासियों के मन में धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक क्रान्ति उत्पन्न कर दीं परन्तु भारत पर अँगरेजों के प्रभुत्व और पाश्चात्य शिक्षा के प्रवेश के कारण यह खतरा उत्पन्न हो गया कि एक दिन देश का जीवन और दृष्टिकोण राष्ट्रीयता से शून्य हो जायगां यह भी भय हुआ कि प्रतिक्रिया के तौर पर पुरानी रूढ़ियों और पद्धतियों के प्रति उत्पन्न अन्धी श्रद्धा न बन जायं जाति के जीवन की ऐसी नाजुक घड़ी में अनेक महापुरुष कार्यक्षेत्र में अवतीर्ण हुए जिन्होंने देश को आत्मरक्षा का मार्ग दिखायां महर्षि दयानन्द सरस्वती का स्थान उन महापुरुषों में बहुत ऊंचा हैं महर्षि का मानसिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण प्राचीन थां

परन्तु उस प्राचीनता में धर्म के रूप में प्रच्छन्न रूप से रहनेवाले खोखले रूढ़िवाद अथवा कुसंस्कारों का कोई स्थान नहीं थां महर्षि देशवासियों के सामने वेदों को हाथ में लेकर प्रगट हुए, और उन्होंने मत–मतान्तरों में बिखरे हुए मनुष्यों को मनुष्यमात्र की समानता के आधार पर बना हुआ वेदोक्त सामाजिक व्यवस्था का मार्ग दिखलायां

परम सन्तोष की बात

निःसन्देह यह परम सन्तोष की बात है कि महर्षि दयानन्द के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी आर्यसमाजवालों ने इस ज्योति को किसी साम्प्रदायिक मन्दिर की अन्धकारमय कोठरियों में बन्द नहीं रखां जिस शिक्षा को उन्होंने अपने लिए इतना अधिक जीवन–जागृतिपूर्ण समझा, उसे उन्होंने भारत की सभी भाषाओं में और आश्चर्यजनक बड़ी संख्या में पत्र तथा पुस्तक–पुस्तिकाओं को प्रकाशित करके अपने अन्य देशवासियों तक भी पहुंचा दियां जिन देशभक्त कार्यकर्त्ताओं ने अपने महान आचार्य की परम्परा को अक्षुण्ण रखते हुए

भारत के सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक अभ्युत्थान के लिए आत्मबलिदान कर दिया, उन्होंने निःसन्देह एक समर्पित जीवन का यापन कियां

हिन्दुमात्र में एकता की स्थापना

आर्यसमाज की सबसे बड़ी सेवा यह है कि उसने जनता में वैयक्तिक तथा राष्ट्रीय आत्मसम्मान की गम्भीर भावना, मन की चेतनता और देश की सांस्कृतिक तथा सभ्यता के लिए प्रेम उत्पन्न करके हीनता की उस विषमय भावना का विनाश कर दिया जो कि मनुष्य को कायर बना देती हैं इसी कारण से हम देखते हैं कि आर्यसमाज जनता को कर्म में प्रवृत्त करने के लिए निरे अपने प्राचीन गौरव के उपाख्यानों और वर्तमान कर्त्तव्य के सम्बन्ध में कोरे व्याख्यानों से ही सन्तुष्ट नहीं हो जाता, वह मानव जीवन के अंगभूत उन क्षेत्रों को भी बलिदान प्रदान करता है जिन पर के हमारे भविष्य की स्थिरता अवलम्बित हैं

आर्यसमाज ने बालकों और युवकों की शिक्षा को ऐसा बनाने का अत्यन्त प्रशंसनीय प्रयत्न किया, जिससे वह भारतीय आदर्शों तथा परम्पराओं के अनुकूल बन सकें आर्यसमाज का एक प्रशंसनीय कार्यक्षेत्र अस्पृश्यता–निवारण रहा है, जिसकी हिन्दू जाति के संगठन के लिए उपेक्षा नहीं की जा सकतीं हिन्दुमात्र में एकता की स्थापना, उनके शारीरिक तथा आध्यात्मिक बल की अभिवृद्धि, उनकी सामाजिक स्थिति की उन्नति, उनमें सत्य और धर्म के प्रति अपार श्रद्धा की जागृति और उनको अपने अधिकारों के रक्षार्थ मर मिटने के लिए प्रेरित करना आर्यसमाज का मुख्य भाग रहा हैं धर्म के क्षेत्र में आर्यसमाज ने अपना दरवाजा सदा खुला रखा है और अपने धार्मिक दृष्टिकोण की उदारता की घोषणा करके उसने न केवल दूसरों के आक्रमणों से हिन्दू धर्म की रक्षा की है, अपितु जो लोग मतान्तरों अथवा धर्मान्तरों के फेर में पड़कर भटक गए थे उन्हें पुनः हिन्दू धर्म में लाने का साहस भी प्रकट कियां

स्वतन्त्रता संग्राम में अग्रणी सैनिक

आर्य समाज ने संगठित रूप से राजनीति में व्यावहारिक भाग कभी नहीं लिया, परन्तु उनके अनेक सदस्य देश की स्वतन्त्रता के संघर्ष में अग्रणी सैनिक रहे हैं उसके माननीय संस्थापक ने अपने स्मरणीय ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में वैयक्तिक तथा राष्ट्रीय जीवन के सभी पहलुओं पर विशेषतः भारतीय दृष्टि से विचार करते हुए, अपने देश की राजनीतिक दशा पर भी स्पष्टतम भाषा में अपना अभिमत प्रकट किया हैं उन्होंने लिखा है–

''अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से, अन्य देशों पर राज्य करने की तो कथा ही क्या कहनी किन्तु आर्यावर्त में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं हैं जो कुछ है सो भी विदेशियों के पादाक्रान्त हो रहा है, दुर्दिन जब आता है तब देशवासियों को अनेक प्रकार का दुःख झेलना पड़ता हैं कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता हैं अथवा मत–मतान्तरों के आग्रहरहित अपने और पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा पर पिता–माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ भी विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं हैं'' क्या हमारी राजनीतिक दासता का इससे अधिक विवाद तथा साहसपूर्ण विश्लेषण सम्भव है? फ्रांस के महान तत्त्वदर्शी रोमांरोला का यह कथन सर्वथा सत्य है कि महर्षि दयानन्द ने भारत के शक्तिशून्य शरीर में अपनी दुर्द्धर्ष शक्ति, अविचलता तथा सिंह पराक्रम से प्राण फूंक दिए हैं भाग्य के आगे सिर झुका देनेवाली तथा निष्क्रिय जनता को उसने सावधान कर दिया कि ''आत्मा स्वाधीन है और कर्म ही भाग्य का निर्माता हैं''

अविनश्वर वसीयत

उत्कृष्ट आध्यत्मिक अनुमति के प्रभाव से श्री अरविन्द ने ऋषि दयानन्द के विषय में यह उद्गार प्रकट किये हैं– ''ऋषि ने अपने देश के निवासियों तथा समस्त विश्व को 'सत्यार्थ प्रकाश' के रूप में जो अविनश्वर वसीयत दी है, वह उनकी प्रखर प्रतिभा का प्रतीक हैं इस ग्रन्थ में वह हमारे सम्मुख एक उत्पादक, कलाकर, समीक्षक, संहारक तथा निर्माता के रूप में प्रकट हुआ हैं वेदों में प्रतिपादित स्वाधीनता, समानता था सत्य के शाश्वत सिद्धान्तों में उसकी अविचल निष्ठा थीं वे अज्ञान, हठधर्मिता और मिथ्या विश्वासों के दुर्ग पर अविश्रान्त प्रहार करते रहें''

अपने प्रगतिशील विचारों का साथ देने में असमर्थ, अपने देशवासियों के प्रभावशाली वर्ग के विरोध का उन्हें सामना करना पड़ा थां परन्तु वे अपने विश्वासानुमोदित सत्य मार्ग पर सदा अविचलित रहे और उन्होंने लक्ष्य के प्रति अपनी विमल निष्ठा और अविश्वास के प्रति अप्रतिहत साहस के साथ घोषणा की– ''सत्य को सत्य के रूप में और असत्य को असत्य के रूप में प्रतिपादित करना की सत्य का यथार्थ रूप हैं असत्य को सत्य के तथा सत्य को असत्य के रूप में प्रकट करना सत्य का प्रकाशन नहीं हैं'' ऋषि ने अपने महान दर्शन 'सत्यार्थ प्रकाश' में एक ऐसे पुनर्गठित समाज का रूप उपस्थित किया है जिससे स्वतन्त्र भारत वर्तमान परिस्थितियों तथा अवस्थाओं में स्वकीय संस्कृति तथा सभ्यता की अमूल्य परम्पराओं के साथ समस्वर करके ही निर्माण कर सकता हैं

आज मुस्लिम लीग यह मांग कर रही है कि 'सत्यार्थ प्रकाश' को जब्त कर लिया जाय, क्योंकि इसके कुछ अंश कुछ मुसलमानों की दृष्टि में आपत्तिजनक हैं अब यह सोचना आपका काम है कि ऐसी अनुचित और दुष्टतापूर्ण असहिष्णुता के प्रतिकार के लिए क्या उपाय किये जाँय, वस्तुतः यह आन्दोलन ही स्वयं सत्य, साहस और विवेक के विचारों से परिपूर्ण उस ग्रन्थ को आधिकारिक लोकप्रिय बनाने में सहायक होगा, जिसने लाखों आत्माओं को शक्ति व मुक्ति प्रदान की है और इस प्रकार इस ग्रन्थ में जीवन्मुक्ति के उस भारतीय महालक्ष्य की सिद्धि में सहायता दी है जिसके लिए उसके प्रणेता ने अपना जीवन लगाया और प्राणों की भी आहुति दीं

आर्यसमाज के अनुयायियों के दृढ़ निश्चय को जानते हुए ही मैं यह कहने का साहस करता हूं कि यदि हमारे धार्मिक अधिकारों में हस्तक्षेप करने का कोई भी दुष्प्रयत्न किया गया तो उसे परिणाम की चिन्ता किये बिना साहस और संगठित प्रतिरोध के बल पर छिन्न–भिन्न कर दिया जायेगां मैं तो यहां तक कहने को तैयार हूं कि सम्पूर्ण हिन्दू जाति और उनके सम्प्रदाय वस्तुतः धार्मिक मत–वादों के रहते हुए भी सभी विचार स्वातन्त्र्यप्रेमी ऐसे हमले को चुनौती के रूप में स्वीकार करेंगें हमें मुस्लिम लीग द्वारा की गई ऐसी बेहूदी मांग के कारणों को नहीं भुला देना चाहिए, इसका कारण जहां एक ओर हमारे आपसी मतभेद और अपने पवित्र धर्मग्रन्थों आदि के प्रति उपेक्षा का भाव है, वहां दूसरी ओर भारतवर्ष को गुलाम बनाए रखने के लिए हमारे शासकों द्वारा प्रजा के एक भाग से पक्षपात करने की दुर्नीति भी हैं सबसे बड़ा सवाल

आज भारत के सामने सबसे बड़ा सवाल देश की राजनीतिक स्वतन्त्रता–प्राप्ति का हैं इसके बिना हमारे सिद्धान्तभूत अधिकारों और परम्पराओं पर आश्रित किसी भी सामाजिक और आर्थिक नवनिर्माण की व्यापक योजना को मूर्त्त रूप देना असम्भव हैं मैं यहां क्षणभर के लिए भी हिन्दू जाति के सभी वर्गों और श्रेणियों में सामाजिक एकसूत्रता की आवश्यकताओं के महत्त्व कम नहीं करतां यह कार्य जनता का रहन–सहन और दृ ष्टिकोण ऊंचा उठाने तथा सम्पूर्ण कृत्रिम बाधाओं का समूलोच्छेद कर डालने के लिए बड़े कठोर व व्यवस्थित परिश्रम द्वारा ही हो सकता हैं मैं यह भी कहूंगा कि हिन्दुओं में ऐसी एकता यथासम्भव इस देश में रहनेवाली सब जातियों के साथ न्याय व सम्मानपूर्ण सौहार्द भावना के साथ ही प्रकट होनी चाहिए, ऐसी वास्तविक और स्थायी सौहार्द भावना होने से पहले कुछ सैद्धान्तिक शर्तें पूरी हो जानी आवश्यक हैं आज यह निर्विवादरूपेण सिद्ध हो गया है कि ब्रिटिश शासकों द्वारा उद्घोषित सिद्धान्त चाहे कुछ भी हो, वे वास्तविक शासन–सत्ता को भारतीयों के हाथों सौंपने और इस प्रकार अपने साम्राज्य के सबसे कीमती भाग को खोने के लिए तैयार नहीं हैं इसीलिए उन्हें भारतीय जनता के विभिन्न दलों में फूट की प्रवृत्तियों को बढ़ाने और कृत्रिम रूप से ऊंचा उठाये हुए निहित स्वार्थों का महत्त्व जताने में अपना फायदा दीखता हैं इसके साथ ही उन्हें कठोर दमन नीति का अनुसरण करने और अपने निरंकुश स्वेच्छाचारितापूर्ण शासन का वैध विरोध भी कुचल डालने में अपना अभीष्ट सिद्ध होता दीखता हैं

एक भारत–अखण्ड भारत

नये विधान में भारत की एकता–अखण्डता का कायम रहना बड़ी आवश्यक बात होगीं पाकिस्तान योजना के आविष्कर्त्ता ही यह बात सबसे अधिक अच्छी तरह समझते हैं कि उनकी योजना तर्क और व्यवहार से कोसों दूर हैं हिन्दुओं को, जो कि भारत की आबादी का तीन चौथाई भाग है, मुस्लिम लीग देश का विधान तैयार करने का हक देने को तैयार नहीं वह तो यह भी नहीं चाहती कि भारतभर के हिन्दू और मुसलमान देश के विधान का संयुक्त रूप से निश्चय करें दोनों ही अवस्थाओं में, उसका कहना है कि इस प्रकार अल्पसंख्यकों पर बहुसंख्यकों का अत्याचारपूर्ण शासन हो जायगां इसके साथ ही उसका दावा है कि जिन प्रान्तों में मुसलमानों का प्रबल बहुमत है, वहां वे स्वयं करोड़ों अल्पसंख्यक हिन्दुओं के भाग्यविध ाायक बन जायेंगे और वहां के हिन्दू आत्मनिर्णय के अधिकार की मांग न करने पायेंगें उस अवस्था में यह अल्पसंख्यकों का अन्यायपूर्ण शासन नहीं होगा, अपितु यह मुसलमानों द्वारा पृथक् मातृभूमि पाने के सिद्धान्त व अधिकार का प्रयोग होगां भारतवर्ष राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टियों से एक है और वह अखण्ड रहेगां यदि कोई इस एकता में बाधा डालना चाहेगा तो वह देशद्रोह के महापराध का दोषी होगा और उसका कितनी भी कीमत चुकाकर मुकाबला किया जाएगां मुस्लिम लीग देशभक्त सन्तानों के बहुमत के संगठित प्रतिरोध के विरुद्ध अकेले ही भारतभूमि को खण्ड–खण्ड करने में सफल नहीं हो सकतीं ब्रिटेन भी अपनी तलवार से भारतमाता का अंग–भंग करके उसके टुकड़े, देश का विभाजन करने के इच्छुकों के आगे, डालने की 'गारण्टी' नहीं दे सकतां किन्तु आज जिन प्रान्तों में हिन्दू अल्प संख्या में हैं और ब्रिटिश नीति प्रत्यक्षतः पाकिस्तानी राज को बढ़ावा देने की है, उन प्रान्तों में हिन्दुओं के अधिकारों और हितों को तुच्छ साम्प्रदायिकता और अवसरवादिता की बलिवेदी पर चढ़ाया जा रहा हैं

वार्ता का मार्ग खुला है अब भी

भारतीय जनता की और मुसलमानों की ही भलाई के प्रति मुस्लिम लीग की चिन्ता–विषयक संजीदगी और निष्कपटता की परख के लिए हमने बारम्बार अपने मतभेद भुला डालने यानी विधान–सम्बन्धी सब विवादास्पद प्रश्नों को युद्ध के बाद तक स्थगित कर देने और भारतीय राष्ट्र की रक्षा तथा उसके पुनरुद्धार के लिए उसके अमित प्राकृतिक साधनों का उपयोग करने हेतु तत्काल शासन–सत्ता के सौंपे जाने के लिए संयुक्त मांग करने के प्रस्ताव पेश कियें बातचीत का मार्ग अब भी खुला है, पर हमारे शासकों द्वारा प्रतिक्रियावादियों को अपनी राष्ट्रविघाती और स्वार्थपूर्ण माँगों को प्रस्तुत करने में प्रोत्साहन देने के निर्लज्जतापूर्ण रवैये को देखते हुए ऐसे किसी मेलमिलाप की आशा बालू में से तेल निकालने के समान ही हैं

आज इसका इलाज यह है कि भारत की आजादी की माँग से सहमत सब दलों और वर्गों का देशव्यापी प्रतिरोध गठित किया जाएं हमें उनलोगों या पार्टियों की खुशामद करने या उनके आगे–पीछे फिरने से कोई फायदा न होगा, जो कि भारत की प्रगति व स्वाधीनता की परवाह नहीं करते और देश को गुलाम बनाए रखने के लिए अपने शासकों के हाथों की कठपुतली बन रहे हैं कुछ ऐसे भी दल और वर्ग हैं जो स्वतः छोटे व नगण्य होते हुए भी संयुक्त हो जाने पर मजबूत और ताकतवर हो सकेंगे, ये स्वतन्त्र भारत का विधान तैयार करने के आधारभूत सिद्धान्त के लिए देशव्यापी विरोधी मोर्चे में सम्मिलित होकर अच्छा काम कर सकेंगें ऐसे संगठन का कर्त्तव्य होगा कि वह राष्ट्र के पुनर्निर्माण विषयक अधिकतम सहमति के प्रश्नों को महत्त्व दिलायें, सहिष्णुता व पारस्परिक सौहार्द भावना पर बल दें तथा हमारे नागरिक, आर्थिक व राजनीतिक अधिकारों के अपहरण करने के प्रयत्नों का निर्भीकतापूर्वक मुकाबला करें

मतान्ध उत्साह के विरोध में

आज हमारे देश में अकर्मण्यता और निराशा का बोलबाला हैं भारत में इस समय कानून का राज नहीं हैं वर्तमान युद्ध–स्थिति का पूरा लाभ उठाकर विदेशी नौकरशाही की पाशविक प्रवृत्तियों ने राष्ट्रीय भावना कां गला घोंटने का काम विविध रूपों में किया हुआ हैं दुर्भिक्ष और महामारियों ने ६ महीने से भी कम समय में २०–३० लाख से भी अधिक मनुष्यों को परलोक पहुंचा दिया हैं ये लोग एक सभ्य सरकार के ही राज्य में भोजन, दवा और आश्रय के अभाव में प्राणों से हाथ धो बैठें यदि मौजूदा दिवालिया, रिश्वतखोर और साम्प्रदायिक मन्त्रिमण्डल को अगले महीनों में शासन चलाने दिया गया तो मेरे प्रान्त (बंगाल) में ऐसा ही संकट १६४४ में फिर देखने का अवसर आ सकता हैं यदि किसी दूसरे देश में ऐसी बदइन्तजामी होती तो वहां की जनता खुली बगावत करतीं इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि ब्रिटिश भारत के इतिहास में इतना अधिक असन्तोष कभी नहीं हुआ जितना कि आज विद्यमान हैं मैं निराशा की बात कहकर समाप्त करना नहीं चाहतां हमें हिन्दुओं में ही अनेक भेद–प्रवृत्तियों का अन्त करना हैं हमें भारत के विभाजन की मांग के बाद निरन्तर बढ़ते हुए मतान्धतापूर्ण उत्साह के विरुद्ध लड़ना होगां हमें हिन्दू शक्ति और देश के सार्वजनिक जीवन के राष्ट्रीय अंश का निरन्तर ह्रास

करने में तत्पर शासक वर्ग के प्रत्याघाती से जाति की रक्षा करनी होगीं

स्व–शासनः भारत का पुरातन अधिकार

हमारे सामने जो काम है वह कठिनाइयों और निराशाओं से परिपूर्ण हैं क्या इतिहास में तुच्छ भिखमंगों की दशा में सुख माननेवाली और थोड़ी–सी क्षणिक प्राप्ति के लोभ में अपनी मान–मर्यादा की बलि देनेवाली किसी गुलाम जाति ने कभी आजादी प्राप्त की है! भारतीय इतिहास में हमें ऐसे यथेष्ट प्रमाण उपलब्ध होते हैं कि यहां की प्रत्येक सन्तति (जाति) के मनुष्यों में ऐसे मानव हुए हैं, जिनकी तुलना किसी भी देश और स्थान के महान पुरुषों से सुगमतापूर्वक की जा सकें पर भारतीय जनता किसी मूल्य पर अपनी राजनीतिक स्वाधीनता की रक्षा के लिए तीव्र भावना से अनुप्राणित नहीं हुईं इसलिए भारत के राजनीतिक और अन्य दलों के नेताओं के आगे, राष्ट्रीय संगठन की उदात्त भावना के साथ, यह प्रमुख कार्य है कि वे स्वाधीनता के प्रेम को कोने–कोने तक फैला दें, जनता जान जाए कि स्व–शासन भारत का पुरातन अधिकार है और यह दृढ़ निश्चय उसमें घर कर जाए कि यदि आजादी नसीब नहीं होती तो जिन्दगी मौत के बराबर हैं

हम जनता से मर्मस्पर्शी अपीलें करके अथवा अपने विरोधियों को गालियां देकर अपने लक्ष्य पर नहीं पहुंच सकतें इसके लिए तो हमें सामाजिक व आर्थिक उत्थान का कार्यक्रम अमल में लाते हुए धर्म को मानवीय सभ्यता के उत्कर्ष के लिए सच्चा संगठनात्मक तत्त्व बनाना होगा, इसी की मजबूत नींव पर भारत की स्वतन्त्रता का निर्माण हो सकेगां हमें इस दृढ़ विश्वास से बल पाकर उत्साहपूर्वक कार्य करना चाहिए कि शक्ति, अधिकार, साम्राज्य और प्रभाव से शासित संसार में अपने प्राचीन गौरव के अनुरूप यह प्रतिष्ठा भारत को ही प्राप्त होगी कि वह न केवल एक पददलित और शोषित जाति के पुनरुद्धार के लिए उच्चतर और उत्कृष्टतर सभ्यता के विकास में हाथ बंटाये बल्कि तन, मन और आत्मा के सह–भाव की ओर प्रगति का भी बीड़ा उठायें इसके बिना स्थायी शान्ति और स्वतन्त्रता सभ्य संसार के किसी भी कोने में स्थिर नहीं हो सकतीं –साभार– 'कश्मीर की वेदी पर' पुस्तक से

खस्त्रोत– साप्ताहिक आर्य सन्देश : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र का १३–१६ मई, २०१६ का अंकय प्रस्तुति– प्रियांशु सेठ, समय भूमिमाता ७० मातृभूमियों में विभक्त है ? इस समय अकेले भारत में २३ मुख्य भाषाएं है । विश्व का अनुमान तो इसी से लगाया जा सकता है । यदि छोटे-छोटे भाषा भेदों को भुला दें, तो भी विश्व में इस समय लगभग १०० मुख्य भाषायें

बोली जाती हैं । मर्यादाओं की बात तो पूछो ही मत । 'मुण्डे मुण्डे मतिभिन्ना, तुण्डे तुण्डे सरस्वती अर्थात् 'प्रत्येक खोपड़ी में अलग-अलग मति है और हरेक मुंह में अलग-अलग बात ।'

सबसे अधिक कष्ट की बात तो यह है, कि मानव-जाति के शत्रु तो आपस में संगठित हैं, पर मानव-जाति आपस में इतनी विभक्त है । संसार के किसी देश के लोगों से पूछिये, कि तुम्हारे देश पर यदि कोई शत्रु आक्रमण करे, तो तुम्हारा कर्त्तव्य क्या है ? वे निश्चित रूप से उत्तर देंगे, जी जान से उस शत्रु से लड़ना । यदि उनसे पूछा जाय, कि जब शत्रु ने आक्रमण किया हो उस समय जो लोग आपस में लड़े, उन्हें आप क्या कहेंगे ? तो वे निश्चित रूप से ऐसे मनुष्यों को हत्यारे, देश-द्रोही आदि नामों से पुकारेंगे । किन्तु क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है, कि मानव जाति के शत्रुओं के घोर आक्रमण की बाढ़ सिर पर रहते हुए भी, वे लोग जो मानव जाति का सर्वोत्तम हित करने की योग्यता रखते हैं, परस्पर लड़ने में व्यस्त हैं । यदि इन भाइयों को कोई कहे, कि तुम देश-द्रोही हो, राष्ट्र हत्यारे हो, तो वे निःसन्देह लड़ने, मरने और मारने के लिए तैयार हो जायेंगे । परंतु यदि किसी शांत आत्म-निरीक्षण के समय में वे अपनी ओर देखें, तो उन्हें लज्जा से मुंह छिपाना पड़े । इससे पता लगता है कि इस संसार में धर्म की उचित मात्रा उपस्थित नहीं है । यदि धर्म का बिल्कुल अभाव होता, तो मानव समाज का बिल्कुल विध्वंस हो जाता । परंतु ७० बड़े-बड़े राष्ट्र खड़े हैं । वे अपना-अपना अस्तित्व धारण कर रहे हैं । इससे पता लगता है कि धर्म का सर्वथा लोप भी नहीं हुआ है । किंतु जब तक मनुष्य समाज इकठ्ठा हो कर अपने शत्रुओं से नहीं लड़ता, तब तक धर्म का पूरा विकास हुआ हैं, यह भी नहीं कह सकते । जिस दिन सुख की धूप संसार के प्रत्येक कोने में प्रविष्ट होगी उस दिन धर्म का सूर्य अपने पूरे प्रताप पर पहुंचा है, ऐसा कह सकेंगे ।

...पृ. २ का शेष

सो शराब अपने पैसो से खरीद लेता हूँ । बिलकुल यही अंदाज अपने देश के शराबीयों का है उन्हें अपने पैसे से शराब खरीदनी है । बाकी राशन का वादा तो सरकारों ने किया हुआ है ।

बहरहाल गालिब की तरह नहीं पर अपनी-अपनी तरह से शराब को लेकर साहित्यिक व सांस्कृतिक गति विधियों में शामल हुए है । शराब को लेकर जितने भी गाने हिन्दी फिल्मों में बने है या मधुशाला सहित जितनी भी कविताए लिखी गई है वो सब इन दिनों सोशल मीडियां में देखने-सुनने को मिल रही है । लोगों को अपनी रचनात्मकता भी चरम पर है । तभी एक पंक्ती के अच्छे व्यंग पढने को मिल रहे है । सब तो यहां लिखा नही जा सकता पर कुछ बेहतरीन नमुने पेश है । एक ने लिखा कि अब जाकर पता चला है कि देश भूखा नही है प्यासा था दूसरे ने लिखा, एक सज्जन ने शराबी को नसिहत दी ठीक से चलो नहीं तो नाली में गिर जाओगे, इस पर शराबीने कहा हम देश की अर्थ व्यवस्था को चलाते है तुम हमे चलाना सिखा रहे हो । तीसरे ने कहा सरकार की कृपा से लोगों के बीच अंग्रेजी में बातचीत शुरु हो जाएगी । अगले ने लिखा शराब की दुकानों पर खडी भीड की फोटो जब सेटलाइट के जरिए अमेरीका और चीन को दिखी तो वहां खलबली मच गई कि कहीं भारत ने करोना वायरस की दवा तो नही खोज ली है ।

एक ने सरकार की मार्मिक अपील बताई जिसमें कहा गया था शराब पीने के बाद सीधे घर जाए कोई भी चिन से लडने नहीं जाए । शराब को लेकर सेकड़ों की संख्या में भीम भी बने । एक और किस्सा दो पुलिस वाले और एक शराबी का है । एक पुलिस वाला शराबी को मारने के लिए लाठी उठाता है तो दूसरा उसको रोकते हुए कहता है ''ना पगले ना'' अगले महिने की तनखा ये ही दिलाएगा ।

काश्मीर की कहानी

-पं. देशबन्धु जी शास्त्री विद्यावाचस्पति

काश्मीर का वैभव :-

आज संसार का कौनसा ऐसा शिक्षित मानव होगा जिसने भारत की पवित्र भुमि काश्मीर का नाम न सुना होगा ? भारतीय जन समाज है लिए तो काश्मीर का स्थान वैसा ही है जैसा कि मनुष्य शरीर में गले से ऊपर के भाग का हो सकता है । कश्मीर के मनोहर शाल के उपवन, वाटिकाएं, रमणीय उद्यान, प्राकृतिक विशाल काय और सुन्दर तथा निर्मल स्त्रोत एवं झरने बड़ी बड़ी २ झीलें कौन ऐसा सहृदय प्राणी होगा जिसे वे आकृष्ट न करें ? भारतीयों के लिए ही नहीं सभ्य संसार का प्रत्येक व्यक्ति भारत में आकर भी यदि काश्मीर न देख सका तो यह उसका दुर्भाग्य ही समझना चाहिए ।

काश्मी यद्यपि भारत के ५२६ देशी राज्यों में से पहिले एक राज्य था, इस समय प्रान्त है । इसका क्षेत्रफल ८४ हजार ७७१ वर्गमील है । इस राज्य के तीन विभाग अर्थात् सरहदी जिले काश्मीर विभाग ओर जम्भू विभाग जिसमें प्रदेश भोगौलिक दृष्टि से तीन विभागों में विमक्त किया जाता है । जम्भू लदाख-गिलगिल और काश्मीर ।

काश्मीर का इतिहास :-

इस महान प्रदेश पर जोसंकट आया है उसका वास्तस्वरूप जानने के लिए यह आवश्यक है कि राज्य सम्बन्धी कुछ मौलिक तथ्यों के- भौगौलिक, ऐतिहासिक और राजनीतिक तथ्यों को दृष्टि में रखा जाय । भारत के स्वर्ग काश्मीर के बारे में राजकवि कल्हणा अपनी राजतंगिणी और और प्राचीन इतिहासों में लिखा है कि सर्व प्रथम काश्मीर भूमि एक बड़े भारी जलशय केरूप में थी जो कि चारों तरह से र्वतों से घिरी हुई एक निवास के अयोग्य जगह थी । जिसको ब्रह्मा के पुत्र मरीची और उनके पुत्र महर्षि कश्यप ने निवास योग्य स्थल प्रदेश बनाया । इसी कारण इसका पूर्व नाम ''कश्यप-मीर'' था । जिसका अपभ्रंश काश्मीर आज कहलाता है । सृष्टि से ले के महाभारत युद्धपर्यन्त और महाराजा युधिष्ठिर जी पर्यन्त काश्मीर प्रदेश यहा के राजाधीन था । एवं युधिष्ठिर जी पर्यन्त काश्मीर प्रदेश यहां के राजाधीन था । एवं युधिष्ठिर से ले के ईसापूर्व २४५ वर्ष पर्यन्त यहा का शासनभार भारतीयों ने अपने ही कन्धों पर लिया था । कुछ समय बाद इस प्रदेश पर तातारों का अधिकार हुआ था परन्तु कनिष्क नरेश ने पुनः अधिकार कर लिया । इसके बाद हूणी ने आक्रमण करके इसे खूब लूटा सताया, ह्यूनसांग के कथनासुसार हूणों ने यहां बड़े जुल्म किये । इसके कई पर्व चाद फिर वहां हिन्दुओं का राज्य रहा । इनमें से ललितादित्य (७१५-५२ ई.) और अवन्तिवर्मन (८१३-५५) ने काश्मीर पर राज्य करके काफी उन्नति की और यहां हिन्दुओं के अनेक प्रसिद्ध मन्दिर आदि बनवाये । १९ वीं शताब्दी तक यहां हिन्दुओं का राज्य रहा, इसके बाद फिर पश्चिम से विदेशी जातियों के आक्रमण हुए । उनमें से प्रथम १३२२ ई. में जुल्फी कादिर खां ने काश्मीर पर हमला किया और भीषण लूट-मार के बाद हजारों ब्राह्मणों को कैदी बना कर ले गया । इससे पूर्व मोहम्मद गजनवी ने भी एक असफल हमला किया था तथापि ईसा की सन् १३४१ में हिन्दू राजा उदियानदेव काश्मीर का शासन करते रहे । जिसको कि उनके मुसलमान मन्त्री अमीरशाह ने कत्ल करके अपना नाम सम्मुद्दीन रख कर उनका शासन अपने हाथों में ले लिया था । बस यही से काश्मी में हिन्दू राजाओं का अंत हो जाता है ।

मुसलमान शासकों का काल -

१५७६ में मुगल सन्नाट अकबर ने काश्मीर को पूर्व काजीन मुसलमान शासकों से छीन कर अपने साम्राज्य का अंग बना लिया । औरंगजेब की मृत्यु के समय १७०७ से कुछ काल बाद तक १७५६ मुगलवंश के आधीन रहकर काश्मीर फिर अहमदशाह दुर्रानी एक अफगान शासक के हाथ में चला गया था । जिसको १८१८ में सिक्ख महाराजा रणजीतसिंह ने जीत कर अपने राज्य का अंग बना लिया था अधिक समय तक सिक्ख राज्य भी न रह सका और १८४६ में सिक्खों की पराजय हो जाने पर लाहौर की सन्धि में १ करोड़ रूपये के बदले में काश्मीर और पंजाब का सिंध तक का इलाका अंग्रेजों के हाथ में चला गया और मुसलमान शासकों का भी यहां पर आना हो जाता है ।

गुलाबसिंह के वन्शजों का काल :-

अंग्रेजों के हाथ में काश्मीर चला जाने के पश्चात् महाराजा रणजीतसिंह के एक योग्य सेनापति एवं अंग्रेजों के कृपापात्र महाराजा गुलाबसिंह ने ७५ लाख रुपये देकर काश्मीर के इलाके को अपने अधिकार में कर लिया था यही गुलाबसिंह की मृत्यु १८५६ ई. में हो गई और उनके पुत्र महाराजा वीरसिंह ने सिंहासन संभाल लिया । १८८५ तक शासन करने के उनके अगले उत्तराधिकारी महाराजा प्रतापसिंह हुए जिनकी अवस्था उस समय ३५ वर्ष की थी । प्रतापसिंह के ही शासन काल में गिलगित, उत्तर पश्चिमी सीमान्त प्रदेश काश्मीर के पुनः अधिकार में आया था । १८२५ में प्रतापसिंह लगातार ४० वर्ष सफलता के साथ शासन करके अपना सिंहासन महाराजा हरिसिंह को सौंप गये थे । हरिसिंह की अवस्था शासन भार होते समय ३० वर्ष की थी । हरिसिंह ने लगभग सभी दिशाओं में पर्याप्त त्रडति की परन्तु अंग्रेजी सरकार की कूटनीतिक चालों में आकर महाराजा ने कभी २ अपने यहां की बहुमत जनता को सन्तुष्ट करने का प्रयत्न नहीं किया । इसी का परिणाम था कि १९३३ में एक प्रलयंकारी साम्प्रदायिक उत्पात खड़ा हुआ था । जिसमें हजारों हिन्दुओं की जीवन हानि हुई थी ।

पूर्ण स्वतन्त्रता और काश्मीर समस्या :-

इसके साथ ही भारत की राजनैतिक जागृति का काश्मीर पर भी पर्याप्त प्रभाव पड़ने लगा १९२६ में माहोर में अत्यन्त महत्वपूर्ण राजनीतिक समारोह हुआ । भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपने ऐतिहासिक लाहोर के अधिवेश में पं. जवाहर लाल नेहरू के राष्ट्रपतित्व में पूर्ण स्वतन्त्रता का प्रसिद्ध प्रस्ताव पास किया । उसके बाद ही कांग्रेस ने देश में सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाया जिसका काश्मीर की जनता पर अनिवार्यतः प्रभाव पड़ा । श्री चुडगर के सभापतित्व में देशी राज्यों के कार्यकर्ताओं की लाहोर में ही बैठक हुई जिसमें अनेक प्रस्ताव पास किये गये । इन प्रस्तावों में कई काश्मीर राज्य के सम्बन्ध में भी थे । काश्मीर के कुछ नवयुवकों ने देशी राज्यों के कार्यकर्ताओं की

इस बैठक में और कांग्रेस के अधिवेशन में भी भाग लिया। पर इसके साथ ही दूसरी ओर अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के वार्षिक अधिवेशन में अध्यक्षपद से अपने भाषण में डॉक्टर इकवाल ने पाकिस्तान की योजना सामने रखी और उसी योजना के अन्तर्गत जम्मू और काश्मीर राज्य को भी शामिल रखा। यह उस समय की बात है जब पंजाब प्रांत में साम्प्रदायिकता की लहर धीरे २ फैलती जा रही थी। जब पाकिस्तान की योजना पंजाब के मुसलमानों के कानों में सुनाई पड़ी तब उन्होंने लोलुपता से काश्मीर की ओर देखा। एवं राजनीतिक और आर्थिक शोषम के लिए उन्हें ''नये क्षेत्रों और नये चिरागाहें की जरूरत पड़ी। काश्मीर उनके प्रांत की सीमा के निकट था, और फलतः वह उनकी आँखों में गड़ गया। वे काश्मीर के मामले में बड़ी दिलचस्पी लेने लगे। अहमदी, अहरार, लीगी और ऐसे ही अन्य सभी लोग सक्रिय हो गये और इनमें से कुछ लोग जिन्हें अन्य स्थानों में नीचा देखना पड़ा था, काश्मीर में अपनी खोई हुई इज्जत पुनः प्राप्त करने के प्रयत्न में जुट गये।

देशद्रोही शेख अब्दुल्ला और काश्मीर :-

उपर्युक्त परिस्थितियों में ही काश्मीर के राजनीतिक जीवन में शेख मोहम्मद अब्दुल्ला का पदार्पण हुआ। १९२६ की बात है जब काश्मीर के कुछ शिक्षित मुसलमान युवकों में राजनीतिक चेतना आयी। इन युवकों ने श्रीनगर के मध्यवर्ती भाग में एक वाचनालय की स्थापना की, और उनमें ये नित्य एकत्र होने तथा राज्य की आर्थिक एवं राजनीतिक, साम्प्रदा-समस्याओं पर विचार विनिमय करने लगे। इन्हीं दिनों देशद्रोही अलीगढ़ विश्विद्यालय से एम.एस.सी. की उपाधि लेकर सेख मोहम्मद अब्दुल्ला श्रीनगर लौटे थे, और वे भी वाचनालय में प्रायः आने जाने लगे थे। युवकों के इस दल ने समाचार पत्रों में काश्मीर के सम्बन्ध में लेख तथा जानकारी की अन्य सामग्री भेजना आरम्भ किया। इनके लेखों में मुख्यतः ३ बातों पर ओर दिया था, वह इस प्रकार हैं- १) सरकारी नौकरियों में मुसलमानों को उचित हिस्सा मिले। २) उनकी उचित शिक्षाका प्रबन्ध हो। ३) मुस्लिम छात्रों को छात्रवृत्तियां मिले। धीरे २ इन युवकों ने तत्कालीन प्रभावशाली मुस्लिम क्षेत्रों का पूर्ण समर्थन प्राप्त किया। १९३० की ११ सितम्बर को महाराज हरिसिंह गोलमेज सम्मेलन के सिलसिले में इङ्गलैंड गये थे। उस समय इस दल ने राज्य मन्त्रिमण्डल के पास नवनिर्मित ''सिविल सरविस रिक्रूटमेण्ट बोर्ड'' के सम्बन्ध में इस आशय का आवेदन पत्र भेजा कि राज्य की नौकरियों में शिक्षित मुसलमान युवकों की नियुक्ति के मार्ग में बाधाएं हैं उन्हें दूर किया जाय। इस सम्बन्ध में दल के दो प्रतिनिधि मन्त्रिमण्डल से मिले और इन दो में एक शेख अब्दुल्ला भी थे। १९३१ की २१ जून को वाचनालय की युवक पार्टी ने श्रीनगर में एक साम्प्रदायिक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया जिसका उद्देश्य काश्मीरी मुसलमानों के प्रतिनिधि चुनना और काश्मीर नरेश के सामने रखी जाने वाली मांगों पर जनता की स्वीकृति प्राप्त करना था। सभा समाप्त ही हुई थी और नेताओं ने प्रस्थान ही किया था कि एक यूरोपियन के साथ एक पठान यात्री अब्दुल कादिर ने श्रीनगर के मंच पर चढ़ कर उत्तेजक बातें कहीं जिससे सम्पूर्ण श्रीनगर में साम्प्रदायिकता की आग बड़े जोर से जलने लगी और ४ दिन बाद राजद्रोह के अपराध में अब्दुल कादिर गिरफ्तार कर लिया गया।

महाराजा गोलमेज सम्मेलन में भाग लेकर काश्मीर लौट चुके थे। महाराजा ने जनता को शांत एवं सन्तुष्ट करने की कोशिश की और उसे यह चेतावनी भी दी कि ''अनुचित कार्यों'' द्वारा राज्य सरकार को झुकाने का प्रयत्न सफल न होने दिया जायेगा। परन्तु यह धमकी और चेतावनी वे असर रही, संघर्ष प्रबल और तीव्र हो उठा। १२ जुलाई को श्रीनगर सेंट्रल जेल में उनके मुकदमें के दिन जेल के फाटक पर साम्प्रदायिक जनता की भारी भीड़ जमा हो गई। जिला मजिस्ट्रेट ने घटना स्थल पर पहुँचते ही भीड़ के नेताओं को गिरफ्तार करने का आदेश दिया। नेताओं की गिरफ्तारी के कारण उत्तेजित जनता ने पुलिस पर पत्थर फेंके, हिन्दू दुकानों को लूट लिया, राज्य में साम्प्रदायिक उपद्रव हुआ और हिन्दुओं के घर लूटे गये और दुर्भाग्यवश राजनीतिक प्रश्न ने साम्प्रदायिक रूप धारण कर लिया। १३ जुलाई की रात को साम्प्रदायिक उपद्रव के कारण शेख अब्दुल्ला को भी गिरफ्तार कर लिया गया। यह आंदोलन जंगल की आग की तरह सारे काश्मीर में फैल गया और उसके कमजोर पड़ने का कोई लक्षण नहीं दिखाई दे रहा था।

उपद्रवों के कारणों की जांच के लिए महाराजा ने कमेटी नियुक्त की। जाँच कमेटी की रिपोर्ट पर राज्य के तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीबेकफील्ड हटा दिये गये' और महाराज ने राजा हरिकिशन कौल को प्रधानमन्त्री नियुक्त किया। परन्तु राजा हरिकिशन कौल जैसे कड़े आदमी को भी सामप्रदायिक आंदोलन दबाने में सफलता न मिली। अन्ततः विवश होकर राजा हरिकिशन कौल ने शेख मोहम्द अब्दुल्ला तथा आंदोलन के आय नेताओं को जेल से रिहा कर दिया पर इससे आंदोलन को और बल मिल गया। इस आंदोलन के बीच पंजाब के मुसलमानों ने ''काश्मीर कमेटी'' की स्थापना की और इस कमेटी ने आंदोलन के समर्थन में अपनी शक्ति भर कार्य किया। १४ अगस्त को ''काश्मीर दिवस'' मनाया गया। पंजाबके मुस्लिम समाचार पत्रों ने काश्मीर के इस आंदोलन का जोरों से समर्थन किया और यह समर्थन प्रदान करने में उनका उद्देश्य यह था कि काश्मीर की राजनीति पर मुस्लिम लीग का प्रभुत्व स्थापित हो जाय।

इन्हीं दिनों काश्मीर नरेश के विश्वासपात्र होने के नाते सर तेजबहादुर सप्रु ने सरकार को प्रभावित किया और परिणामत १९३१ की अगस्त को कास्मीर सरकार तथा जन-नायकों के बीच एक अस्थाई समझौता हुआ। समझौता अधिक कायम नहीं रह सका और परिणामतः २१ सितम्बर को शेख अब्दुल्ला पुनः गिरफ्तार कर लिये गये और ५ अक्टूबर १९३१ को अपनी बरसगांठ के दिन विसेष घोषणा प्रकाशित कर उन्हें छोड़ दिया गया।

ग्लैंसी-कमीशन :-

काश्मीर के महाराज की ५ अक्टूबर की घोषणा के अनुसार राज्य के सभी सम्प्रदायों के लोगों ने अपनी शिकायतों और मांगों के सम्बन्ध में स्मृति-पत्र उपस्थित किये। इन स्मृति-पत्रों पर विचार करने के लिये महाराज श्री बी. जे. ग्लैंसी की अध्यक्षता में एक कमीशन बैठाया। कमीशन की अधिकांश सिफारिशों को महाराज ने स्वीकार कर लिया। ये सिफारिशें मुख्यतः बेगार-प्रथा, चरागाह कर, सरकारी नौकरी में भेदभाव आदि के खत्म किये जाने के सम्बन्ध में थी और इनमें जनता के शैक्षणिक विकास तथा भूमि पर उसके स्वाभित्व के सम्बन्ध में भी उचित जोर दिया गया। श्री ग्लींसी की अध्यक्षता में आयोजित विधा विषयक सम्मेलन ने राज्य में व्यवस्थापिका सभा की स्थापना, मताधिकार पृथक् निर्वा बन एवं प्रतिनिधित्व के सम्बन्ध में भी सिपारिशें की और फलतः राज्य में ऐसी व्यवस्थापिका सबा (असेम्बली) कायम करने की बात मान ली गई जिसकी सदस्य संख्या ७५ हो और जिसमें ३३ सदस्य जनता द्वारा निर्वाचित हों।

'यज्ञ में मन्त्रों से आहुति क्यों?'

'– **शिवदेव आर्य**'ए
'– **गुरुकुल पौन्धा, देहरादून (उत्तराखण्ड)'**

''यज्ञ'' शब्द 'यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु' धातु से नङ्प्रत्यय करने से निष्पन्न हुआ हैं जिस कर्म में परमेश्वर का पूजन, विद्वानों का सत्कार, संगतिकरण अर्थात् मेल और हवि आदि का दान किया जाता है, उसे यज्ञ कहते हैं यज्ञ शब्द के कहने से नानाविध अर्थों का ग्रहण किया जाता है किन्तु यहाँ पर यज्ञ से अग्निहोत्र का तात्पर्य हैं अग्नेः होत्रम् अग्निहोत्रम्, अग्नि और होत्र इन दोनों शब्दों के योग से अग्निहोत्र शब्द निष्पन्न हुआ हैं जिसका अर्थ होगा कि जिस कर्म में अत्यन्त श्रद्धापूर्वक निर्धारित विधिविधान के अनुसार मन्त्रपाठसहित अग्नि में जो ओषधयुक्त हव्य आहुत करने की क्रिया की जाये, उसे अग्निहोत्र कहते हैं

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में अग्निहोत्र के लाभ बताते हुए कहा है कि – ''सब लोग जानते हैं कि दुर्गन्धयुक्त वायु और जल से रोग, रोग से प्राणियों को दुःख और सुगन्धित वायु तथा जल से आरोग्य और रोग के नष्ट होने से सुख प्राप्त होता हैं' (सत्यार्थप्रकाश, तृतीयसमुल्लास)' आगे भी कहा है – ''देखो! जहां होम होता है वहां से दूर देश में स्थित पुरुष के नासिका से सुगन्ध ा का ग्रहण होता है वैसे दुर्गन्ध का भीं इतने ही से समझ लो कि अग्नि में डाला हुआ पदार्थ सूक्ष्म हो के फैल के वायु के साथ दूर देश में जाकर दुर्गन्ध की निवृत्ति करता हैं (सत्यार्थप्रकाश, तृतीयसमुल्लास)'

इसी प्रकरण में प्रश्न उठाते हुए महर्षि स्वामी दयानन्द जी कहते हैं कि ''जब ऐसा ही है तो केशर, कस्तूरी, सुगन्धित पुष्प और इतर आदि के घर में रखने से सुगन्धित वायु होकर सुखकारक होगां'' इसके उत्तर में लिखते हैं कि – ''उस सुगन्ध का वह सामर्थ्य नहीं है कि गृहस्थ वायु को बाहर निकाल कर शुद्ध वायु को प्रवेश करा सके क्योंकि उस में भेदक शक्ति नहीं है और अग्नि ही का सामर्थ्य है कि उस वायु और दुर्गन्धयुक्त पदार्थों को छिन्न–भिन्न और हल्का करके बाहर निकाल कर पवित्र वायु को प्रवेश करा देता हैं'(सत्यार्थप्रकाश,तृतीयसमुल्लास)'

अग्निहोत्र की प्रक्रिया में मन्त्रोच्चारण की क्या आवश्यकता है? यदि अग्निहोत्र में बिना मन्त्रों से आहुति दे दी जाये तो क्या हानि? क्या मन्त्रों के स्थान पर अर्थों को पढ़कर आहुति दी जा सकती है? अंग्रेजी, ऊर्दू आदि के शब्दों को बोलकर क्या आहुति दी जा सकती है? इन समस्त जिज्ञासाओं का समाधान लोग अपने–अपने निज–आग्रह के आधार पर करते हैं किन्तु इन शंकाओं का समाधान हमारे वैदिक वाङ्मय में पहले से ही उपलब्ध हैं अतः शास्त्रमर्यादाविहीन निज–आग्रह को छोड़ सत्यान्वेषी होना आवश्यक हैं

यज्ञ के प्रबल पोषक महर्षि देव दयानन्द सरस्वती जी ने शास्त्रानुशीलन कर ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के वेदविषयविचार में कहा है कि – 'वेदमन्त्रोच्चारणं विहायान्यस्य कस्यचित्पाठस्तत्र क्रियते तदा किं दूषणमस्तीति? अत्रोच्यते – नान्यस्य पाठे कृते सत्येतत्प्रयोजनं सिध्यतिं कुतः? ईश्वरोक्ताभावान्निरतिशयसत्यविरहाच्च.... (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वेदविषयविचारः)'

अर्थात् यज्ञ में वेदमन्त्रों को छोड़ के दूसरे का पाठ करें तो क्या दोष है? अन्य के पाठ में यह प्रयोजन सिद्ध नहीं हो सकतां ईश्वर के वचन से जो सत्य प्रयोजन सिद्ध होता है, आप्त पुरुषों के ग्रन्थों का बोध और उनकी शिक्षा से वेदों को यथावत् जानके कहता है, उसका भी वचन सत्य ही होता हैं और जो केवल अपनी बुद्धि से कहता है वह ठीक–ठीक नहीं हो सकतां इससे यह निश्चय है कि जहाँ–जहाँ सत्य दीखता और सुनने में आता है, वहाँ वेदों में से ही फैला है, और जो जो मिथ्या है सो सो वेद से नहीं, किन्तु वह जीवों ही की कल्पना से प्रसिद्ध हुआ हैं क्योंकि ईश्वरोक्त ग्रन्थ से सत्य प्रयोजन सिद्ध होता है, सो दूसरे से कभी नहीं हो सकतां

महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने मन्त्रों से ही यज्ञों का विधान किया है, इसका प्रमाण ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में पुनः प्राप्त होता है – 'अग्निहोत्रकरणार्थं ताम्रस्य मृत्तिकाया वैकां वेदिं सम्पाद्य, काष्ठस्य रजतसुवर्णयोर्वा चमसमाज्यस्थलीं च संगृह्य, तत्र वेद्यां पलाशाम्रादिसमिधः संस्थाप्याग्निं प्रज्वाल्य, तत्र पूर्वोक्तद्रव्यस्य प्रातः सायंकालयोः प्रातरेव वोक्तमन्त्रैर्नित्यं होमं कुर्य्यात (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, पंचमहायज्ञविषयः)' इसमें स्पष्ट शब्दों में कहा है कि मन्त्रैर्नित्यं होमं कुर्य्यात् अर्थात् मन्त्रों से नित्य होम को करें अतः स्पष्ट सिद्ध है कि यज्ञ वेद मन्त्रों से ही होना अनिवार्य हैं

लब्धप्रतिष्ठित वैदिक विद्वान् आचार्य रामनाथ वेदालंकार जी ने सामवेद भाष्य में – 'उपप्रयन्तो अध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्नयें आरे अस्मे च शृण्वतें (सामवेद–1379)' इस मन्त्र का व्याख्यान करते हुए लिखा है कि ब्रह्मयज्ञ वा देवयज्ञ करते हुए मनुष्य मन्त्रोच्चारणपूर्वक परमेश्वर के गुण–कर्म–स्वभावों का ध्यान किया करें और उससे शिक्षा–ग्रहण किया करें

आर्य संन्यासी स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती जी श्रीमद्भगवद्गीता का भाष्य करते हुए कहते हैं कि–

'विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम्'
'श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षतें (गीता–17/13)'

अर्थात् जो शास्त्र–विधि से हीन हो, जिसमें लोक–कल्याणार्थ अन्न तक न दिया गया हो, जो मन्त्रोच्चारणरहित हो, जिसमें कार्यकर्त्ताओं को दक्षिणा न दी गई हो, जो श्रद्धारहित मन से किया गया हो, उस यज्ञ को तामस यज्ञ कहते हैं इससे स्पष्ट है कि मन्त्रहीन यज्ञ तामससंज्ञक है, पुनः तामस यज्ञ विश्वकल्याण के लिए क्यों कर हो सकता है?

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी यजुर्वेद भाष्य में कहते हैं –

'उपप्रयन्तौअध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्नयें'
'आरैअस्मे च शृण्वतें (यजुर्वेद–3/11)'

अर्थात् मनुष्यों को वेदमन्त्रों के साथ ईश्वर की स्तुति वा यज्ञ के अनुष्ठान को करके जो ईश्वर भीतर–बाहर सब जगह व्याप्त होकर सब व्यवहारों को सुनता वा जानता हुआ वर्त्तमान है, इस

कारण उससे भय मानकर अधर्म करने की इच्छा भी न करनी चाहियें जब मनुष्य परमात्मा को जानता है, तब समीपस्थ और जब नहीं जानता तब दूरस्थ है, ऐसा निश्चय जानना चाहिएं

वैदिक विद्वान् हरिशरण सिद्धान्तालंकार जी ने यजुर्वेद के भाष्य करते हुए –

'यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहां'

'एष ते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्ववीरस्तं जुषस्व स्वाहां (यजुर्वेद – 08/22)'

प्रस्तुत मन्त्र एष ते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः का अर्थ कहते हुए स्पष्ट संकेत किया है कि 'यह यज्ञ आपका ही हैं इसके करने वाले आप ही हैं, हम लोग तो निमित्तमात्र हैं यह यज्ञ ऋग, यजुः आदि के सूक्तों से उच्चारण युक्त हैं'

पद्मभूषण डॉ. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी ने यजुर्वेद के सुबोध भाष्य में –

'समुद्रे ते हृदयमप्स्वन्तः सं त्वा विशन्त्वोषधीरुतापः' 'यज्ञस्य त्वा यज्ञपते सूक्तोक्तौ नमोवाके विधेम यत् स्वाहां'

'(यजुर्वेद – 08/25)'

प्रस्तुत मन्त्र 'यज्ञस्य त्वा यज्ञपते सूक्तोक्तौ नमोवाके विधेम यत् स्वाहा' का अर्थ – ''हे यज्ञ के पालक! जिसमें वेद के सूक्त कहे जायें, ऐसे उत्तम यज्ञ कार्य में और वैदिक वचनों के उच्चारण में जो हवन योग्य पदार्थ हैं, वह तुझे हम अर्पण करें'' किया हैं

शतपथब्राह्मण में यज्ञस्य त्वा यज्ञपते सूक्तोक्तौ नमोवाके विधेम यत् स्वाहा की व्याख्या – ''यज्ञस्य त्वा यज्ञपते सूक्तोक्तौ नमोवाके विधेम यत्स्वाहेति तद्यदेव यज्ञस्य साधु तदेवास्मिन्नेतद्दधातिं' (शतपथ ब्राह्मण – ४/४/५/२०)' की हैं

मन्त्रों के बिना यज्ञ के स्वरूप की तथा उसकी पूर्णता की कल्पना नहीं जा सकती है, क्योंकि त्रयी विद्या रूप मन्त्र, यज्ञ से अभिन्न हैं – 'सैषा त्रयी विद्या ऋक्यजूंषिनामानिं (शतपथ ब्राह्मण – 1/1/4/3)'

शतपथ ब्राह्मण में आगे कहा गया है –

''वागेवैर्चश्च सामानि च मन एव यजूंषि' (शतपथ ब्राह्मण – 1/1/4/3)'

अर्थात् वाचा, मनसा, कर्मणा यज्ञानुष्ठान के लिए मन्त्रों का विनियोग आवश्यक हैं

छान्दोग्य ब्राह्मण ग्रन्थ में वेदमन्त्रों से यज्ञादि कर्म का प्रतिपादन किया गया है –

'यो ह वा अविदितौर्षेयच्छन्दो दैवताविनियोगेन ब्राह्मणेन मन्त्रेण याजयति वौध्यापयति वा स स्थाणुं वर्च्छति गर्त्तं वा पद्यते, प्रमीयते वा पापीयान् भवति यातयामान्यस्यच्छन्दांसि भवन्तिं'

'(छान्दोग्य ब्राह्मण–3/7/5)'

इसका भाव यह है कि जो याजक वैदिक छन्द को बिना जाने ही केवल देवता सम्बन्धी विनियोगपूर्वक ब्राह्मण ग्रन्थीय मन्त्र से यजन कराता है, अध्यापन करता है, वह मन्त्र प्रयोक्ता याजक या अध्यापक वृक्ष, लता आदि जड़ योनि को प्राप्त होता है अथवा दुःखालयौत्मक नरक को प्राप्त करता हैं इसप्रकार यदि कोई करता है तो उसे छान्दोग्य ब्राह्मण में पापियों में अतिनिकृष्ट कहा हैं

इसी तथ्य का प्रतिपादन करते हुए सर्वोनुक्रम सूत्र में महर्षि कात्यायन जी कहते हैं कि –

''छन्दांसि गायर्त्र्यादीनि एतान्यविदित्वा यौधीतैनुब्रूते जपति, जुहोति, यजते याजयते तस्य ब्रह्म निर्वीर्यं यातयामं भवतिं अथौन्तरा श्वगर्तं वा पद्यते स्थाणुं वर्च्छति प्रमीयते वा पापीयान् भवतिं'' (सर्वोनुक्रम सूत्र)

अर्थात् जो व्यक्ति गायत्री आदि छन्दों के ज्ञान से रहित होकर वेदाध्ययन करता है, वेदमन्त्रों का अभ्यास करता है, यज्ञकर्म में वेदमन्त्रोंर को उच्चारित करता है, यागक्रिया करता व कराता है तो वह व्यक्ति पाप का भागी होता हैं अतः महर्षि कात्यायन के अनुसार सिद्ध है कि यज्ञ मन्त्र के सम्यक् उच्चारण व विधिविधान से होना चाहिएं

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में यज्ञ में मन्त्रों के उच्चारण का उद्देश्य दर्शाते हुए कहा है कि इससे मन्त्रों की रक्षा भी होती हैं इसी तथ्य को महर्षि पतंजलि ने व्याकरणमहाभाष्य के प्रथम पस्पशाह्निक में उल्लेख किया है कि – ''रक्षार्थं वेदानामध्येयं व्याकरणम्'' अर्थात् वेदों की रक्षा के लिए व्याकरण का अध्ययन करें वेदाध्ययन के द्वितीय प्रयोजन में महर्षि पतंजलि ने व्याकरणमहाभाष्य में लिखा है कि – ''ऊहः खल्वपि – न सर्वैर्लिङ्गैर्न च सर्वाभिर्विभक्तिभिर्वेदे मन्त्र निगदिताः ते चावश्यं यज्ञगतेन यथायथं विपरिणमयितव्याः तान्नावैयाकरणः शक्नोति यथायथं विपरिणमयितुम्' (व्याकरणमहाभाष्य, प्रथम पस्पशाह्निक)' उक्त प्रयोजन में भी स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि वेदमन्त्रों से यज्ञकर्म होना चाहिएं

आगे एक प्रयोजन को महर्षि पतंजलि उद्धृत करते हुए कहते हैं कि –

'विभक्तिं कुर्वन्ति – याज्ञिकाः पठन्ति – प्रयाजाः सविभक्तिकाः कार्या इतिं न चान्तरेण व्याकरणं प्रयाजाः सविभक्तिकाः शक्याः कर्तुम् विभक्तिं कुर्वन्तिं (व्याकरणमहाभाष्य, प्रथम पस्पशाह्निक)' यहाँ पर प्रयाजाः शब्द से वेदमन्त्र का ग्रहण किया गया हैं अतः स्पष्ट है कि वेद मन्त्रों से यज्ञ होना आवश्यक हैं

प्रयाजा शब्दात्मक ऋग्वेद में दो मन्त्र प्राप्त होते हैं –

'प्रयाजान्मे अनुयाजाँश्च केवलानूर्जस्वन्तं हविषो दत्त भागम्'

'घृतं चापां पुरुषं चौषधीनामग्नेश्च दीर्घमायुरस्तु देवाः'

तव प्रयाजा अनुयाजाश्च केवल ऊर्जस्वन्तो हविषः सन्तु भागाः तवाग्ने यज्ञो यमस्तु सर्वस्तुभ्यं नमन्तां प्रदिशश्चतस्रः (ऋग्वेद–10/51/8–9)'

पाणिनीय व्याकरण के 'ओमभ्यादाने (अष्टाध्यायी–8/2/87)' इस सूत्र में कहा है कि मन्त्रों के उच्चारण से पूर्व जो ओ३म् है, उसको प्लुत हो जाता हैं 'प्रणवष्टेः (अष्टाध्यायी–8/2/89)' इस सूत्र के अनुसार यज्ञकर्म में वेदमन्त्रों के टि भाग को 'ओ३म्' आदेश का विधान कर उदाहरण प्रस्तुत किया गया है – 'अपां रेतांसि जिवन्तो३म्' इससे स्पष्ट होता है कि पाणिनीय काल में वेदमन्त्रों से यज्ञ करने का विधान थां

''पुरुषविद्यानित्यत्वात् कर्मसम्पत्तिर्मन्त्रे वेदे' (निरुक्त)' आचार्य यास्क के अनुसार पुरुष की विद्या अनित्य है और मन्त्र परमात्मा की वाणी होने से नित्यज्ञान हैं अतः अग्निहोत्रादि कर्म नित्यज्ञान से युक्त युक्त वेदमंत्रें से करने चाहिएं उपरोक्त वैदिक प्रमाणों से यह ज्ञात होता है कि महर्षि देव दयानन्द सरस्वती जी ने आर्षशास्त्र मर्यादा का अनुशीलन कर शास्त्रपरम्परा को अक्षुण्य बनाने का मार्ग प्रशस्त किया है, हमें इसी शास्त्रपरम्परा के मार्ग का अनुसरण करना चाहिएं

एक देश – अनेक भाषाएँ – एकात्म भाषाएँ

– श्रीमति लीना मेहेंदले

कुछ दिनों पूर्व गृहमंत्री श्री अमित शाहने कह दिया एक देश, एक भाषा और यह एक विवादका विषय बन गयां मुझे लगा कि इस पूरी चर्चामें तकनीकीकी भूमिका भी है, उसकी चर्चा करूँ यह है संगणकीय (कम्प्युटर) तकनीकं संयोगसे यह विषय भी शाहके गृहमंत्रालयका हिस्सा हैं

हम एक राष्ट्र, एक भाषाका नारा क्यों लगाते हैं? क्योंकि एक स्वतंत्र राष्ट्रके रूपमें आज भी हम विश्वको यह नही बता पाते कि हमारी राष्ट्रभाषा कौनसी है? फिर वैश्विक समाज अंग्रेजीको हमारे देशकी कम बिंजव भाषा मानने लगता हैं उनकी इस अवधारणाकी पुष्टि हम भारतीय ही करते हैं जब दो भारतीय व्यक्ति विदेशमें एक दूसरेसे मिलते हैं तब भी अंगरेजीमे बात करते हैं देशके अंदर भी कितने ही माता– पिता जब अपने बच्चोंके साथ कहीं घूमने जा रहे होते हैं तब उनके साथ अंगरेजीमें ही बोलते हैं ये बातें देशके गृहमंत्रीको अखर जायें और वह सोचे कि काश हमारे देशकी एक घोषित राष्ट्रभाषा होती, तो यह स्वाभाविक भी है और उचित भीं अंग्रेजीको अपनी संपर्क भाषा बनानेके कारण हमारी जगहंसाई तो होती ही है, हमारा आत्मगौरव भी घटता हैं

तो जब तक हिंदीको राष्ट्रभाषा नही घोषित किया जाता तबतक विश्वके भाषाई इतिहासमें यही लिखा जायगा कि विश्वके किसी भी देशकी राष्ट्रभाषाके रूपमें हिंदीकी प्रतिष्ठा नही हैं स्मरण रहे कि हमसे छोटे छोटे देशोंकी भाषाओंको भी राष्ट्रभाषाका सम्मान प्राप्त है, यथा नेपाली, बांग्ला, ऊर्दू, फिनिश, हंगेरियन इत्यादिं जब हम कह सकेंगे कि हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी है, तब विश्व कहेगा कि यह १३० करोडवाले लोकतंत्रकी भाषा हैं वर्तमानमें हिंदीका विवरण ऐसा नही दिया जा सकता, केवल यह कहा जाता है कि भारतमें लगभग साठ करोड नागरिकोंकी भाषा हिंदी हैं इस प्रकार वैश्विक बाजारमें संख्याबलसे मिलनेवाला लाभ ना तो देश ले पाता है ना हिंदी भाषां

इसी कारण मैं इस बातका पूरा समर्थन करती हूँ कि हमें शीघ्रातिशीघ्र हिंदीको राष्ट्रभाषा घोषित करना चाहियें इस मर्यादित अर्थमें अमित शाहका नारा एक राष्ट्र, एक भाषा मुझे पूरी तरह मान्य हैं

परंतु जिस प्रकार हमारे राष्ट्रकी अस्मिताका प्रश्न महत्वपूर्ण है, उसी प्रकार हमारी हर भाषाका, हर बोलीका, हर लिपीका प्रश्न महत्वपूर्ण हैं इस महत्वको समझानेके लिये एक खूबसुरत उदाहरण देती हूँ महाराष्ट्रकी राजभाषा मराठी हैं इसके तीन जिलोंमे एक बोलीभाषा है, अहिराणीं यहाँके एक तहसिलदारने एक दिन मुझे बोलकर सुनाया कि कैसे चोपडा तहसिलकी अहिराणी अलग है, और धडगावकी अलग, पाचोराकी अलग है, धुलेकी अलग, शिरपूरकी अलग, जलगावकी अलगं अर्थात पांच पांच कोसपर भाषा कैसे बदलती है, इसका बेजोड नमूना वह मुझे दिखा रहा थां मेरा भी अनुभव है कि पटनाकी भोजपूरी अलग सुनाई देती है और जौनपुरकी अलगं मेरी दृष्टिमें यह भाषाका सामर्थ्य है कि वह कितनी लचीली हो सकती हैं

तो जब अस्मिताकी बात करते है तब इस खूबसुरतीकी सराहना भी होनी चाहिये और सुरक्षा भीं जैसे राष्ट्रीय अस्मिताके लिये हिंदीको राष्ट्रभाषा घोषित किया जाना सही है वैसे ही मराठीकी अस्मिताको बनाये रखनेका प्रयास भी उसी गृहमंत्रालयको करना होगां अहिराणीकी अस्मिता बनाये रखनेका प्रयास केंद्रके साथ महाराष्ट्रकी सरकार और जनताको करना होगा जबकि अलग अलग तहसिलोंमें बोली जानेवाली अलग अलग अहिराणियोंको संभालने हेतु सरकारके साथ वहाँ वहाँके लोगोंको आगे आना होगां लेकिन इस संभालनेकी प्रक्रियामें अन्य भाषाकी भिन्नताके प्रति विद्वेष या वैरकी भावना नही होनी चाहियें अर्थात इनकी आन्तरिक एकात्मताको समझकर उसका सम्मान होना चाहिये, और उससे लाभ उठाना चाहिये इतना सिद्धान्त तो सबकी समझनेमें आता हैं

क्या इस सिद्धान्तका कोई व्यावहारिक पक्ष है, विशेषकर ऐसा जिसमें गृहमंत्रालयके लिये कोई जिम्मेदारी हैं जी हाँ, हैं जितनी अधिाक तेजीसे और कुशलतासे गृहमंत्रालय उसे निभायेगा, उतनी ही तेजीसे हम अपने देशके भाषाई एकात्मको निभा पायेंगें

इस दिशामें मेरे कुछ तकनीकी सुझाव हैं जो आयटी क्षेत्रसे संबंधित होनेके कारण वे भी गृहमंत्रालयकी कार्यकक्षामे हैं

यहाँ थोडासा संगणकके (कम्प्यूटरके) इतिहासमें झांककर देखना होगां १९९० आते आते सरकारी संगणकीय संस्थान सीडॅकके एक संगणक शास्त्रज्ञ श्री मोहन तांबेने एक संगणक सॉफ्टवेयरकी रचना की जिसका इनस्क्रिप्ट नामक कीबोर्ड लेआउट भारतीय वर्णमालाके अक्षरोंके क्रमानुसार तथा आठ उंगालियोंसे टाइपिंग करने हेतु अत्यंत सरल व सुविधाजनक हैं इसका प्रयोग सारी भारतीय लिपियोंसहित सिंहली, भूटानी, तिब्बती, थाई आदिके लिये एक जैसा ही हैं यह जो सॉफ्टवेयर बना उसका नाम था लीप–ऑफिसं इसके लिये सीडॅकने जेजे स्कूल ऑफ आर्टके डीन श्री जोशीकी सहायतासे करीब बीस अलग– अलग फॉण्टसेट भी बनवायें कदाचित आज भी किसी किसीके स्मरणमें उनके नाम होंगे यथा सुरेख, वसुंधरा, योगेश इत्यादिं हिंदीके साथ साथ प्रत्येक भारतीय लिपीके लिये भी १०–२० फॉन्टसेट बनाये गयें एक तरहसे कहा जा सकता है कि तांबेजी व जोशीजीने पद्मश्री मिलने जैसा काम

किया थां इनके माध्यमसे किसी भी एक लिपीमें लिखा गया आलेख एक ही क्लिकसे दूसरी लिपीमें और मनचाहे फॉण्टमें बदला जा सकता था (देखें वीडिये लिंक प्देबतपचज–चंतज–2 –– मराठी हिन्दी धपाधप लेखन हेतू –– ीजजचेःध्ध्.लवनजनइम.बवउध् ूबीःअ0ल्हण्पा•ीिाजा मेाा हरा ळ्ठ रा मद ळ्ठ)

श्री तांबेने १६६१ में ही इस इनस्क्रिप्ट की–बोर्ड लेआउटको तथा संगणककी प्रोसेसर चिपमें स्टोरेज हेतु किये जानेवाले एनकोडिंगको ब्यूरो ऑफ इण्डियन स्टॅण्डर्डसे भारतीय प्रमाणके रूपमें घोषित भी करवा लिया जिसका बडा लाभ आगे चलकर हुआ जब १६६५ में इंटरनेटका युग आयां

१६६५ से २००५ तकका सीडॅकका इतिहास एक विफलताका इतिहास है और मैं यहाँ उसे दोहराना नही चाहतीं उसका एक आयाम यह था कि लीप ऑफिसको देशकी लिपीयोंके सुगठित प्रचारहेतु समर्पित करनेकी जगह साडॅक उसे १५००० में बेचती थीं इतना कहना पर्याप्त है कि इस दौरान श्री तांबे सीडॅकसे बाहर हुए और इंटरनेटके साथ कम्पॅटिबल न होनेके कारण सीडॅकने अन्ततोगत्वा लीप–ऑफिसको भी डंप कर दियां इस बीच इंटरनेट तथा नई १६– बिटवाली संगणकीय प्रणालीमें पुराना युरोपीय स्टॅण्डर्ड ँब्प्प् अपर्याप्त होनेके कारण एक नया विश्वव्यापी स्टॅण्डर्ड बनने लगा युनीकोडं इसे बनानेवाले युनीकोड कन्सोर्शियमने अर्थात अंतर्राष्ट्रीय संगठनने श्री तांबेद्वारा प्रमाणित करवाये स्टॅण्डर्डको ही भारतीय भाषाओंके स्टॅण्डर्ड हेतु स्वीकार कियां यही कारण है कि लीप–ऑफिसका पूरा सॉफ्टवेयर ना सही, परन्तु इनस्क्रिप्ट की–बोर्ड लेआऊटके साथ तांबेका बनाया स्टोरेज एनकोडिंग हो तो वह लेखन इंटरनेटपर टिकाऊ रहता है, जंक नही होतां

देशका दुर्भाग्य है कि उपरोक्त तकनीकी बारीकियाँ तथा अगले परिच्छेदोंमें वर्णित बारकियाँ भी गृहमंत्रालय या सीडँकके वरिष्ठ अधिकारियोंको ज्ञात ही नही हैं उनसे चर्चा करनेपर वे इन्हें तुच्छ बताते हुए इस बातपर गर्व करते हैं कि वे इन बारीकियोंको अपने निम्नस्तरीय अधिकारियोंको सौंपते हैं, स्वयं इनपर विचार नही करतें मेरा मानना है कि जब तक वे इन बातोंको ठीक तरह नही समझेंगे, तबतक वे भाषाई एकात्मताको बचाने या उसका लाभ उठानेमें सक्षम नही होंगें

युनीकोड कन्सोर्शियमके द्वारा इंडियन स्टॅण्डर्ड स्वीकारे जानेके बाद भी सीडॅकने अपने लीपऑफिसको और खास तौरसे उसके फॉण्ट– सेटोंको देशी लिपियोंके लिये समर्पित नही किया बल्कि उसे डंप कर दियां भारत सरकारने ऐसा होने दिया और २००५ में देशी भाषाओंको रोमनागरीमें लिखे जाने हेतु एक करोड सीडी फ्री बँटवाईं कभी कभी मुझे यह भी शंका होती है कि शायद यह कोई प्लान था देशकी लिपियाँ समाप्त करनेकां इसी रोमनागरी सॉफ्टवेयरका बदला रूप आज हम गूगल–इनपुट टूलके रूपमें मार्केटमें छाया हुआ देखते हैं लेकिन गृहमंत्रालय आज भी निर्देश दे सकता है कि लीप ऑफिसके लिये बनवाये गये सभी लिपियोंके फॉण्ट ओपन डोमेनमें डाले जायें दृ अर्थात विनामूल्य उपलब्ध कराये जायें

संगणकके इतिहासमें १६८० के दशकसे ही मायक्रोसॉफ्टकी ऑपरेटिंग सिस्टमका बोलबाला और एकाधिकार प्रस्थापित होने लगा थां लेकिन हमें नही भूलना चाहिये कि उन्हें भी एक मार्केटकी आवश्यकता होती है और वे ग्राहकको असंतुष्ट नही रख सकतें उनके दो बडे मार्केट थे –– एक चीन जहाँ उनकी मनमानी नही चलती थीं इसीलिये चीन आग्रही रहा कि वहाँ संगणकके सारे आदेश चीनी लिपीमें ही दिखेंगें दूसरा मार्केट है भारतं लेकिन सीडॅक और भारत सरकारने बारबार यही रोना रोया है कि क्या करें, मायक्रोसॉफ्ट हमें भारतीय भाषाई सुविधा नही देतां बहरहाल, इंटरनेट आनेके बाद सीडॅकने यही रोना रोया कि बीआयएस एवं युनीकोड द्वारा मान्य एनकोडिंगको भारतीय लिपियोंमें लागू करनेके लिये मायक्रोसॉफ्ट सहयोग नही दे रहां

तभी १६६६ में मायक्रोसॉफ्टको टक्कर देती हुई और अपना मंच पूरे विश्वके उपयोगके लिये फ्री रखनेका दावा करनेवाली लीनक्स ऑपरेटिंग सिस्टम मार्केटमें आई, उसने भारतीय लिपियोंके दो–दो तीन–तीन फॉण्ट बनवाये और सारी सुविधाएँ फ्री डाऊनलोडसे देने लगें तब जाकर मायक्रोसॉफ्टने भी प्रत्येक भारतीय लिपीके लिये एक–एक फॉण्ट बनवाकर अपना मार्केट बचायां इस हेतु उन्हें भी अपना की–बोर्ड लेआउट वही रखना पडा जो तांबेका बनाया था – लेकिन मायक्रोसॉफ्टके अधिकारियोंने भी कभी उनके श्रेयको नही स्वीकारां

तो आज भारतीय फॉण्ट–मार्केटकी स्थिती यह है कि लीप–ऑफिस, श्रीलिपी, कृतिदेव इत्यादि नामोंसे प्रत्येक भारतीय लिपीके जो चालीस पचास फॉण्टसेट्स भारतीय कंपनियोंके पास उपलब्ध है वे इंटरनेटपर जंक हो जाते हैं क्योंकि उनका एनकोडिंग बीआयएस स्टॅण्डर्ड या युनीकोडके अनुसार नही हैं और जिस मायक्रोसॉफ्ट या लीनक्स ऑपरेटिंग सिस्टममें युनीकोडके अनुरूप भारतीय भाषाई सॉफ्टवेयर बनाया गया है, उनके पास दो–तीनसे अधिक फॉण्ट उपलब्ध नही हैं इसका भारी नुकसान हमारी प्रकाशन संस्थाओंको उठाना पडता है क्योंकि फॉण्टफटीगसे बचने और प्रकाशनकी सुंदरताके लिये उन्हें कई फॉण्ट्सकी आवश्यकता होती हैं

यदि गृहमंत्रालयको अपनी सारी भाषाकों व लिपियोंको सम्मान एवं उपयोगिता बनाये रखनी है तो सीडॅकके पास जो लीप–ऑफिसके फॉण्ट कचरेमें पडे हैं, उन्हें देशके लिये उपलब्ध कराया जा सकता हैं भाषाई प्रकाशन गतिमान रहेगा तो भाषाई प्रगति भी तेजीसे हो सकेगीं

लेकिन उससे भी एक बडी व्यवस्था गृहमंत्रालयको करनी होगीं चूँकि सभी भारतीय लिपियोंकी वर्णमाला एक ही है, अतः युनिकोड प्रणालीमें जहाँ आज उन्हें अलग अलग खानेमें

रखवाया गया है, उसकी बजाय एक ही खानेमें रखवाया जायं इससे सारी लिपीयोंमें लिप्यंतरण करना सरल होगा और एकात्मताके लिये वह भी बडा संबल बनेगां इसे एक उदाहरणसे समझा जा सकता हैं मान लो कि गीता प्रेसने भगवद्गीताकी संस्कृत आवृत्ति देवनागरीमें बनाई तो उसे तत्कालही अन्य लिपियोंमें भी बदला जा सकेगां दूसरा फायदा भी है दृ किसीभी लिपीमें टाइप किया शब्द गूगल–सर्चपर सभी लिपियोंमें उपलब्ध होगा और यह शोधप्रकल्पोंमें अतीव उपयोगी रहेगां ज्ञातव्य है कि अरेबिक वर्णमालाके आधारपर बनी सारी भाषाएँ युनीकोडने एकत्रित रखी है अतः उनकी शीघ्र लिप्यंतरण संभव हैं इसी प्रकार चीनी वर्णमालासे चलनेवाली चीनी– जपानी– कोरियाई लिपियाँ भी एक ही खानेमें हैं यही सुविधा भारतीय लिपियोंमें होनी चाहिये जैसी लीप ऑफिसमें थीं लेकिन इसके लिये गृहमंत्रालय व युनीकोड कन्सोर्शियमके बीच संवाद बनाना पडेगां

प्रधान मंत्रीने हालमें ही इंगित किया है कि एक राज्यके स्कूली बच्चोंको दूसरे किसी राज्यकी भाषासे परिचित कराने के प्रयास हों इस दिशामें अहमदाबादके एक प्रोफेसरकी बनाई साराणियोंका उल्लेख औचित्यपूर्ण हैं एक बडे पोस्टर पर दस– दस शब्द संस्कृत, हिंदी सहित अलग– अलग भाषाओंमें, उनकी अपनी लिपी और देवनागरी लिपीके साथ लिखकर ये सारणियाँ बनाई हैं ऐसे लगभग १५०० शब्द संकलित किये हैं ऐसे दस– दस पोस्टर स्कूलोमें लगाये जायें तो स्वयमेव बच्चोंमें अपने देशकी सभी भाषाओंके प्रति परिचय, अपनापन और उत्कंठा बढेगी जो भाषाई एकात्मताके लिये आवश्यक हैं

दो अन्य कार्यक्रम गृहमंत्रालयको हाथमें लेने होंगें एक है भारतीय भाषाओंके लिये अच्छा ओसीआर बनवाना ताकि भारतियोंके पास सैकडों वर्षोंसे जमा पडे हस्तलिखित व पुस्तकें पढकर उन्हें डिजिटलाइज किया जा सकें जो भारत चांदपर जा सकता है वह एक अच्छा ओसीआर नही बना सकता हो तो आजके वर्तमानमें यह कोई सुखद बात नही कही जा सकतीं

भाषाई एकात्मता बढाने हेतू एक भाषासे दूसरी भाषामें भाषांतरका कार्यक्रम हाथमें लेना पडेगां यह मानवी तरीकेसे और संगणकसे दोनों प्रकारसे करना पडेगां इसके लिये अंग्रजीको माध्यम भाषा बनानेका सीडॅकका पुराना तरीका गलत था जिस कारण उन्हें यह प्रोजेक्ट भी डंप करना पडां आज गूगल भी अंग्रेजीको ही माध्यम बनाकर इसका प्रयास कर रहा हैं इसके स्थान पर हमारे संगणक वैज्ञानिकोंको यदि संसाधन उपलब्ध कराये जायें और संस्कृतको माध्यम बनाते हुए भाषांतर करवाया जाय तो वह प्रयास तेजीसे सफल होंगें

यह बार बार कहा जा रहा है, विशेषतया देशके बडे वैज्ञानिकोंद्वारा कहा जा रहा है कि जिन बच्चोंपर छठकीं कक्षातक अंग्रेजीका बोझ नही पड रहा वे मातृभाषाके माध्यमसे पढाईमें अच्छी प्रगति करते हैं भविष्यकी आवश्यकताओंके लिये कभी भी अंगरेजी सीखी जा सकती हैं लेकिन देशमें अमीरोंसे आरंभकर गरीबोंतक यह भ्रम फैलाया गया है कि अंग्रेजी सीखकर व अंग्रेज बनकर ही हमारा कल्याण हो सकता हैं जो अंगरेज न बने वह गँवार कहलाये और अपमानित होता रहें इस मानसिकताको बदलनेके लिये देशके सभी स्कूलोंमें छठवीतक अंग्रेजीको हटाना और उस उस राज्यकी भाषाओंको अनिवार्य करना ही एकमेव उपाय हैं

हमारे देशमें लगभग पांच–सात हजार बोलीभाषाएँ हैं और उनमें रचा–बसा मौखिक साहित्य हमारी एक बडी धरोहर हैं इसे तत्काल रूपसे उस उस राज्यकी लिपियोंमें लिखकर संरक्षित करनेकी योजना बननी चाहियें त्रिपुरा, कोंकण, असमकी कुछ बोलियांपर हो रहे कामको मैंने देखा हैं एक एक अकेला स्कॉलर इसे कर रहा होता हैं इन सबको गृहमंत्रालयकी ओरसे प्रोत्साहन तथा आर्थिक सुविधा देना आवश्यक हैं

तत्काल रूपसे सभी सरकारी कार्यालयोंमें इनस्क्रिप्ट प्रणालीसे हिंदी व भाषाई लेखनको बढावा देना आवश्यक हैं वरिष्ठोंको भी यह प्रणाली सीखनी चाहियें जो रोमनागरी पद्धतीसे देवनागरी लिखते हों उनसे यह आशा नही की जा सकती कि वे भारतीय लिपियों व भाषाओंपर गहराने वाले संकटको या समाधानकी बारीकियोंको समझें

सरकारने प्रायः सभी स्कूलोंमें संगणक लॅब दिये हैं सिद्धान्ततः चौथीसे दसवीं कक्षातक संगणक सीखनेकी सुविधा हैं लेकिन वस्तुस्थिति है कि प्रायः सत्तर प्रतिशत बच्चे दसवींसे पहलेही स्कूल छोड देते हैं उन्हें रोमन पद्धतिसे सिखाकर क्या होगा दृ कमसे कम उनकी खातिर तो इनस्क्रिप्ट पद्धतिसे लेखन–टंकण सिखानेका कार्यक्रम स्कूलोंमें होना चाहियें इसके लिये उनके शिक्षकोंको भी तैयार किया जाना चाहियें

सारांशमें कहना होगा कि यदि हम विश्व बाजारमें भारतकी साखको सदा वृद्धिंगत रखना चाहते हैं तो हिंदीको राष्ट्रभाषा घोषित करना सर्वोचित उपाय हैं गृहमंत्रीका नारा एक राष्ट्र, एक भाषा इस अर्थमें सही है कि बाहरी देशोंके लिये हमारा फॉर्म्युला वयं पंचाधिकं शतं होना चहियें यह वह सूत्र है जो युधिष्ठिरने गंधर्वोंद्वारा बंदी बनाये गये दुर्योधनको छुडा लानेके लिये अन्य चार पांडवोंसे कहा था कि हम सारे कौरव एक सौ पांच है और परकीय लोगोंके सम्मुख हमारी यही पहचान होनी चाहियें लेकिन देशके अंतर्गत हम ध्यान रखना होगा कि अन्य भाषाएं इसे अपनी अस्मिताका संकट न समझें तकनिकीके सहारे उनके इस संशयको दूर किया जा सकता हैं यह तभी संभव है तब गृहमंत्रालय, डीओटी, राजभाषा आदि विभगोंके वरिष्ठतम अधिकारी इन तकनीकी बारीकियोंको समझें, उन उन तकनीकोंको अपनायें और आत्मसात करें गृहमंत्रीके लिये यह भी एक चुनौती होगी कि उनके अधिकारियोंकी मानसिकताको कैसे भाषाई एकताके पक्षमें मोडा जा सकता हैं

पांचवीं और छठी अनुसूची एक तरह से संविधान की आत्मा है।

अगर इन्हें ईमानदारी से लागू किया गया होता, तो आज आदिवासी सबसे विकसित और संपन्न होते। लेकिन इनके विकास के लिए चलायी गयी योजनाएं कभी भी ईमानदारी से लागू नहीं की गयी।

-स्वामी अग्निवेश, सामाजिक कार्यकर्ता

नक्सल आंदोलन वैचारिक तौर पर शुरू से ही विरोधाभासों से भरा रहा है। नक्सलवाद का मूल उद्देश्य माओ की इस पंक्ति में सूत्रबद्ध किया जाता है, 'सता बंदूक की नली से निकलती है,' बंदूक की नली से क्रांति की बात शुरू से ही गलत रही है। वर्ग शत्रु के नाम पर हत्या करने का सिलसिला नक्सलबाड़ी से शुरू होकर आज कई क्षेत्रों में फैल चुका है, माओवादियों का माओ से प्रेरण लेना भी गलत है, इस आंदोलन में आद्यात्मिक सोच की कमी रही है। १९६७ में जब पश्चिम बंगाल के नक्सलबाड़ी में यह आंदोलन पहली बार प्रकट हुआ था, उस समय इसे कई बुद्धजीवियों का समर्थन हासिल हुआ। उस समय में कोलकाता में शिक्षण के कार्य में था। लेकिन काफी सोचविचार के बाद मैंने इस आंदोलन की खमियों को देखते हुए इससे नहीं जुड़ने का फैसला लिया।

हर आंदोलन में उतार-चढ़ाव आते हैं, नक्सल आंदोलन में भी कई उतार-चढ़ाव आये, लेकिन, यह कहा जा सकता है कि नक्सलबाड़ी से दरभा तक के सफर में इस आंदोलन के मूल में गरीब और शोषितों का आवाज बनने का मकसद बना रहा है। इस आंदोलन के उद्देश्य में कोई घोषित बदलाव नहीं आया। इस आंदोलन की शुरुआत ही भूमि सुधार, जल, जंगल और जमीन के मुद्दे पर हुई। आज भी नक्सली इसी मुद्दे को लेकर संघर्ष कर रहे हैं। इसमें कोई शक नहीं कि नक्सली अपने मूल मुद्दे पर शुरू से टिके रहे हैं। सैद्धांतिक स्तर पर देखें, तो नक्सल आंदोलन में भटकाव नहीं आया है। लेकिन, नक्सलवादी हिंसा की समस्या दिनोदिन गंभीर हो रही है। अगर नक्सल आंदोलन के प्रसार के कारणों की बात करें, तो मेरा मानना है कि अगर संविधान की पांचवी और छठी अनुसूची की ईमानदारी से लागू किया गया होता, तो नक्सली समस्या पैदा ही नहीं होती। लेकिन आजादी के ६५ साल बीतने के बावजूद इसी जमीनी स्तर पर लागू नहीं किया जा सका है। अब जब समस्या गंभीर हो गयी है, तो सरकार इसे बंदूक से कुचलना चाहती है। ऐसी कोशिश गलत है और इससे समस्या का कोई हल नहीं निकलेगा।

पश्चिम बंगाल में नक्सलबाड़ी से शुरू हुए आंदोलन को कुचलने के लिए वहां के तत्कालीन मुख्यमंत्री सिद्धार्थ शंकर रे ने भी ऐसी गलती की थी। इस दमन के कारण सैकड़ों बेगुनाह मारे गये थे और आंदोलन तेजी से पूरे बंगाल में फैल गया था। उस समय के दौर से लेकर

आज यह आंदोलन जंगल महल से दंडकारण तक फैल गया है। यह क्षेत्र आदिवासी बहुत और खनिज संपदा बहुल है। लेकिन, इन इलाकों में मूलभूत सुविधाएं तक नहीं है। जबकि खनिज संपदा का दोहन कर कंपनियां मालामाल हो रही हैं। इसी शोषण के खिलाफ नक्सली आवाज उठा रहे हैं और उन्हें आदिवासियों का समर्थन मिल रहा है। दरभा में कांग्रेसी नेताओं के काफिले पर हुए हमले में कई बुगुनाह मारे गये। लेकिन, इस दौरान नक्सलियों का दूसरा चेहरा भी देखने को मिला। वे घायलों का इलाज भी कर रहे थे। उनके निशाने पर सलवा-जुडूम के कर्ताथर्ता महेंद्र कर्मा थे। नक्सलियों ने योजनाबद्ध तरीके से यह कार्रवाई की। मकसद कुछ भी हो, लेकिन बेगुनाहों की हत्या करना जधन्य और अक्षम्य है। किसी भी हत्या को जायज नहीं ठहराया जा सकता है। चाहे वह सरकार करे या नक्सली।

अभी भी वक्त है कि केंद्र और राज्य सरकारें ईमानदारी से इस समस्या की समीक्षा करे और संविधान को पूरी ईमानदारी से लागू करे, लेकिन राजनेता, नौकरशाह और कॉरपोरेट घराने नहीं चाहते कि इस समस्या को समाधान हो, ताकि वे प्राकृतिक संसाधनों को लूटते रहें। सरकार को बातचीत का रास्ता अपनाना चाहिए, नक्सली बातचीत के लिए अभी भी तैयार हैं, लेकिन सरकार कहती है कि किससे बातचीत करें। जब सरकार नागा विद्रोही, उल्फा, कश्मीरी अलगाववादियों से बातचीत के लिए तैयार हो सकती है। तो नक्सलियों से क्यों नहीं।

इसकी मुख्य वजह यह है कि शासक वर्ग की संतानें अर्द्धसैनिक बलों में भर्ती नहीं होते। देश के गरीब परिवारों के लोग ही इसमें भर्ती होते है। जब २०१० में ७६ सीआरपीएफ के जवान मारे गये, तो किसी नेता ने घटनास्थल पर जाने की जहमत नहीं उठायी। यह सरकार की मंशा को दर्शाता है। आजादी के बाद से ही सरकार की गलतियों के कारण आदिवासियों का शोषण हुआ है। पांचवीं और छठी अनुसूची एक तरह से संविधान की आत्मा है। अगर इन्हें ईमानदारी से लागू किया गया होता, तो आज आदिवासी सबसे विकसित और संपन्न होते। लेकिन इनके विकास के लिए चलायी गयी योजनाएं कभी भी ईमानदारी से लागू नहीं की गयी। १९७४ में ट्राइबल सब प्लान, १९९६ में पेसा एक्ट, २००६ में बना वन अधिकार कागजों में सिमट कर रह गया। मेरा मानना है कि मौजूदा समस्या के लिए नक्सलियों के मूकाबले सरकार अधिक दोषी है। सरकार की गलतियों से ही ऐसा लग रहा है कि वह हार रही है और नक्सली जीत रहे हैं। क्योंकि वह इस समस्या की मुख्य वजह पर गौर नही कर रही है। यह सही है कि बंदूक के दम पर व्यवस्था बदलने की माओवादियों की रणीनीति भारत में कभी कारगर नहीं होगी। लेकिन हिंसा का जबाव हिंसा नहीं हो सकता है। इसलिए इसका समाधान शांतिपूर्ण तरीके से ही संभव है।

-शेष पृ. ४ पर

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month
आर्य जीव 18-06-2020 Registered-Reg. No. HD/783/2018-20 RNI No. 52990/93

ఆర్య జీవన్
హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక
Editor : Sri Vithal Rao Arya, M.Sc. LL.B., Sahityaratna.
Arya Pratinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-500095.
Phone No. : 040-66758707, 24753827, Fax : 040-24557946.
Annual Subscription Rs. 250/- సంపాదకులు : విఠల్ రావు ఆర్య, మంత్రి సభ

To,

सच कसैला होता है

-कवि ब्रजेन्द्र सोनी

ये लोग नही जानते ये क्या कर रहे है
बापू इन्हें माफ करना
गांधी एक सच था ।
इसलिए मारा गया ।
सुकरात भी हकीकत था ।
इसलिए गले मे विष उतारा गया ।
दयानन्द भी सच था ।
इसलिए विष दिया गया
सच तो जीसस भी था
इसलिये सूली पर टांग दिया गया ।
पहले इन्हे मारा,
फिर इनसे जीने का सलीका मांग लिया ।
ये सच अकेला होता है
उपर से कसैला होता है
पहले इसे मरना पडता है
फिर दिखावे को इससे हारना पडता है

शायद दुनिया में इसीलिये
झुठों की रीत होती है
क्यों की सच की तो
मरने के बाद ही जीत होती है
यदी सच, सचमुच जिन्दा हो
सीना तान के खडा हो
तो लंका जीती जाती है
रावण भी मारा जाता है
कुरुक्षेत्र की रण भूमी में
झूठों का शीश उतारा जाता है
गुंजन होता है, पुजन होता है
आराधन होता है
सच पुछो तो जीते जी
सच का संस्थापन होता है
लगता है अब सच डरेगा नही
चंद झुठों के हाथों मरेगा नही
सम्मान की कमान कंधे पर है,
लक्ष्य से पहले अब धरेगा नही ।

रामप्रसाद बिस्मिल

राम प्रसाद बिस्मिल जी के जन्म दिवस पर एक संस्मरण

''एक कोर्ट केस की सुनवाई के दौरान सरकारी वकील ने इन्हें मुलजिम की बजाय 'मुलाजिम (नौकर)' कह दिया । इन्होंने तुरंत आपत्ति उठाई...!

''मुलाजिम हमको मत कहिये, बड़ी तकलीफ होती है अदालत के अदब से हम यहाँ शरीफ लाये हैं
झुका देते हैं मौजे हवादिश, हम अपनी जुर्रत से
कि हमने आंधियों में भी चराग अक्सर जलाये हैं''

पंडित जी को जब फांसी पर लटकाने के लिए ले जाया जा रहा था उस समय ओ ये गीत गाए रहे थे ।

''मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे ।
बाकी न मैं रहूँ न मेरी आरज़ू रहे ।।
जब तक कि तन में जान रगों में लहू रहे।
तेरा ही ज़िक्र या तेरी ही जुस्तजू रहे ।।''

फांसी के तख्ते के पास पहुँचे ।
तख्ते पर चढ़ने से पहले उन्होंने अपनी अंतिम इच्छा व्यक्त की-
I Wish the downfall of British Empire, I Wish the downfall of British Empire, I Wish the downfall of British Empire अर्थात् 'मैं ब्रिटिश साम्राज्य का नाश चाहता हूँ', 'मैं ब्रिटिश साम्राज्य का नाश चाहता हूँ', 'मैं ब्रिटिश साम्राज्य का नाश चाहता हूँ' इसके बाद उन्होंने परमात्मा का स्मरण करते हुए निम्नलिखित वैदिक मंत्र का पाठ किया-

**ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न आ सुव ।।**

'हे परमात्मा ! सभी अच्छाइयाँ हमें प्रदान करो और बुराइयों को हमसे दूर करों । इत्यादि मंत्र का पाठ करते हुए वह फांसी के फंदे पर झूल गये ।

भाई ! विदित हो कि ये स्वामी दयानंद जी की प्रेरणा व महती कृपा से लगभग सभी क्रान्तिकारियों ने देश की आज़ादी को ही अपने जीवन का मूलमंत्र मान कर अपना सर्वस्व लुटाया और बलिदान दिया । सभी अमर शहीदों के अदृश्य चरणों को शत शत नमन ।

-अशोक श्रीवास्तव

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR.
Editor : Sri Vithal Rao Arya E-mail : acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691.

సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్ రావు ఆర్య, మంత్రి సభ, ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్-95. Ph : 040-24753827, E-mail : acharyavithal@gmail.com
संपादक : श्री विट्ठल राव आर्य, मंत्री सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रिन्टर्स, चिक्कड़पल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।
प्रकाशक : आर्य प्रतिनिधि सभा, आं.प्र. -तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद-500 095.